

हंसलोक संदेश



श्री कृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनाएं!



हंसलोक संदेश

भारतीय संस्कृति, आध्यात्मिक ज्ञान व सामाजिक एकता की प्रतीक

वर्ष-16, अंक-8
अगस्त, 2025
श्रावण-भाद्रपद, 2082 वि.स.
प्रकाशन की तारीख
प्रत्येक माह की 5 व 6 तारीख

मुद्रक एवं प्रकाशक-

श्री हंसलोक जनकल्याण समिति (रजि.)
श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, (खसरा नं. 947),
छतरपुर-भाटी माइंस रोड, भाटी, महारौली,
नई दिल्ली-110074 के लिए मंगल द्वारा
एमिनेंट ऑफसेट, डी-94, ओखला इण्डस्ट्रियल
एरिया, फेस-1, नई दिल्ली-110020
से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया।

सम्पादक- राकेश सिंह

मूल्य-एक प्रति-रु.10/-

पत्राचार व पत्रिका मंगाने का पता:

कार्यालय: हंसलोक संदेश

श्री हंसलोक जनकल्याण समिति,
B-18, भाटी माइंस रोड, भाटी,
छतरपुर, नई दिल्ली-110074

मो. नं. : 8800291788, 8800291288

Email: hansloksandesh@gmail.com

Website: www.hanslok.org

Subject to Delhi Jurisdiction

RNI No. DEL.HIN/2010/32010

संपादकीय

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन

मनुष्य कई विषयों का चिंतन करता रहता है। उसे लगता है कि यह मिल गया, तो मैं सुखी हो जाऊँगा; उसके मन में संकल्प-विकल्प होता रहता है। उन विषयों के अतिरिक्त शेष सबको वह अपने लिए हानिकारक समझता है। जब बुद्धि से सब विकल्प हटकर केवल एक विषय से संबंधित संकल्प ही रह जाता है, तब उसमें उसे पाने की इच्छा उत्पन्न हो जाती है। यही इच्छा मनुष्य को कर्म करने के लिए प्रेरित करती है। मनुष्य अपने अंतःकरण के भाव के अनुसार ही क्रिया करता है। मनुष्य वही रहता है, परन्तु इच्छाएं आती-जाती रहती हैं। एक पूरी होती है, तो दूसरी आ जाती है। यह क्रम जीवन भर चलता रहता है। हमारे अंदर इच्छा-शक्ति, ज्ञान-शक्ति और क्रिया-शक्ति तीनों ही विद्यमान हैं। बस, हमें अपनी इच्छा पूर्ति के लिए कुछ करने से पहले अपनी ज्ञान-शक्ति से उसके विभिन्न पहलुओं पर विचार कर लेना चाहिए कि वह शास्त्र विहित है या निषिद्ध, उचित है या अनुचित, सामर्थ्य के अंदर है या नहीं, उससे किसी का अहित तो नहीं होगा! इच्छा अगर इन कसौटियों पर खरी नहीं उतरती, तो उसे त्याग देने में ही भलाई है।

भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं, 'गहन कर्मणो गति' अर्थात् कर्म की गति गहन है। कर्म, विकर्म और अकर्म बताते हुए वह कहते हैं कि इन्हें तत्त्वपूर्वक जानना चाहिए। जब मनुष्य इच्छा की पूर्ति के लिए अपने अंतःकरण में शुद्ध भावना रखते हुए शास्त्रविहित क्रिया करता है, तब वह कर्म कहलाता है। इसमें किसी का अहित नहीं होता, बस कर्ता की कामना की पूर्ति या फल की इच्छा ही उसका मुख्य उद्देश्य होता है; परन्तु मनुष्य जैसा फल चाहता है, वैसा ही उसे मिलेगा, यह उसके वश में नहीं होता। वह तो केवल कर्म करने को ही स्वतंत्र है। भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं, 'कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।' अर्थात् तेरा कर्म पर ही अधिकार है, उसके फलों में नहीं। इच्छाएं बहुत बढ़ने पर मनुष्य परिणाम आदि पर विचार न करके अनुचित और शास्त्र निषिद्ध कर्म करता है। इसी को विकर्म कहते हैं। विकर्म का फल दुःख या प्रतिकूल परिस्थितियां होती हैं। तीसरे प्रकार के मनुष्य अपने कर्म निःस्वार्थ और लोकहित की भावना से करते हैं। वे फल पर दृष्टि नहीं रखते। अपने कर्तव्य-कर्म पर दृष्टि रखते हुए उसे बड़ी ही सावधानी, तत्परता, लगन, ईमानदारी और पूर्ण समर्पण भाव से करते हैं। फल तो उन्हें भी मिलता है, पर वे उसके प्रति आसक्ति न रखते हुए उसे भगवान का प्रसाद समझकर आनंदलोक में रहते हैं। इस प्रकार वह कर्म के बंधन से भी मुक्त रहते हैं। इसे अकर्म कहते हैं।

इस तरह के कर्मयोगी को यह ज्ञान रहता है कि जैसा कर्म, वैसा फल। 'यो यथा कुरुते कर्मस तथा फलमश्नुते।' गणेश पुराण में भी आता है कि 'मनुष्य के किए शुभ या अशुभ कर्म उसका कभी पीछा नहीं छोड़ते। जिस अवस्था में जैसा कर्म किया गया होता है, उस अवस्था में प्राणी को उसका फल भोगना पड़ता है। यह ध्रुव सत्य है।' इसलिए कर्म करने से पहले हमें उसके विषय में भलीभांति विचार कर लेना चाहिए ताकि बाद में पछताना न पड़े। ■

मानव को कर्तव्य बोध का उपदेश देने वाले श्रीकृष्ण का अवतरण दिवस है जन्माष्टमी

जब अधर्म अपनी सीमाएं लांघने लगे, जब समाज सत्य और न्याय से विमुख हो जाए, जब धर्म की रक्षा हेतु कोई अवतरण अनिवार्य हो जाए। ऐसी ही परिस्थिति द्वापर युग में भगवान ने श्रीकृष्ण के रूप में अवतार लिया था। श्रीमद्भगवद् गीता और भागवत पुराण के अनुसार, जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब-तब भगवान अवतरित होते हैं। कहा भी है-

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।

अभ्युत्थानम् अधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥

यानी जब-जब धर्म की हानि और अधर्म का अभ्युदय होता है, तब-तब भगवान इस धरती पर अवतरित होते हैं। भगवान श्रीकृष्ण का जन्म न केवल कंस जैसे अत्याचारी राजा के विनाश हेतु हुआ, बल्कि धर्म की पुनर्स्थापना और मानवता को जीवन के तीन मुख्य स्तंभ ज्ञान, भक्ति और कर्म की महत्ता समझाने के लिए भी हुआ था। उनका जन्म एक ऐसी रात को हुआ जो बाह्य रूप से अंधकारमय थी, परंतु आत्मज्ञान का दीप उस क्षण प्रज्वलित हुआ। जब द्वापर युग के उस कालखंड में पृथ्वी पाप और अत्याचार से कांप रही थी। राजाओं में लोभ, अहंकार और सत्ता का मद व्याप्त था। धर्म केवल नाममात्र का रह गया था। सनातन शास्त्र कहते हैं कि उस समय कंस, जरासंध, शिशुपाल जैसे दुष्ट न केवल जनता को त्रस्त कर रहे थे, बल्कि देवताओं को भी चुनौती देने लगे थे। ऐसे समय में देवताओं ने पृथ्वी के भार को हल्का करने हेतु भगवान विष्णु से अवतरित होने की प्रार्थना की।

भगवान ने देवकी और वसुदेव के पुत्र रूप में जन्म लेकर बताया कि सत्य की स्थापना कोई अलौकिक चमत्कार नहीं, बल्कि विवेकयुक्त कर्म, नीति और त्याग से होती है। भगवान श्रीकृष्ण केवल एक अवतारी पुरुष नहीं, बल्कि युगबोध और विवेक के साक्षात् स्वरूप थे। उन्होंने कंस के

अत्याचारों से जनता को मुक्ति तो दिलाई ही, साथ ही लोगों के अंदर धर्म के प्रति श्रद्धा बढ़े, इसके लिए भी लगातार प्रयत्न करते रहे। जब अपने धर्म सम्मत अधिकारों के लिए युद्ध भूमि में अर्जुन मोह ग्रसित हो गए और करुणा में



श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, 16 अगस्त पर विशेष

फंसकर अपने कर्तव्य से विमुख होने लगे, तब श्रीकृष्ण ने अर्जुन को आत्मा, कर्म, भक्ति और ज्ञान का ऐसा अद्वितीय उपदेश दिया, जो गीता के रूप में युगों तक मानवता का पथ प्रदर्शन करता रहेगा। गीता का एक प्रसिद्ध श्लोक है-

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।

मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि॥

भगवान श्री कृष्ण ने गीता में यह स्पष्ट किया कि मनुष्य

को निष्काम भाव से कर्म करते हुए जीवन के संघर्षों से जूझना चाहिए। जब मोह और भ्रम के अंधकार में विवेक शून्य हो जाता है, तब ईश्वर ही आत्मज्ञान का आलोक

सकता है। महाभारत में बिना अस्त्र उठाए सबसे बड़े युद्ध को दिशा देकर उन्होंने परोक्ष रूप से बताया कि सामर्थ्य का सर्वोच्च उपयोग नीति, संवाद और विवेक में होता है।



बनकर मार्गदर्शन करते हैं।

भगवान श्रीकृष्ण का जीवन केवल लीलाओं की श्रृंखला नहीं, अपितु गहन शिक्षाओं की जीवंत प्रस्तुति है। बाल्यकाल में माखन चुराकर उन्होंने बताया कि बालपन में भी आनंद और उल्लास आवश्यक है। रासलीला में प्रेम की भक्ति का रहस्य छुपा है, तो गोवर्धन उठाकर बताया कि प्रकृति और समाज की रक्षा सामूहिक उत्तरदायित्व है। द्वारका में एक आदर्श राज्य की स्थापना कर उन्होंने बताया कि धर्म केवल वन में नहीं, राजमहलों में भी जीया जा

आज जब समाज फिर से वैमनस्य, लोभ, और नैतिक पतन की दिशा में बढ़ रहा है, तब श्रीकृष्ण का कर्मयोग, उनका नीति-निपुण नेतृत्व और उनका विवेकपूर्ण दृष्टिकोण अत्यंत प्रासंगिक हो गया है। जब युवा मोहग्रस्त होकर लक्ष्यविहीन हो जाते हैं, तब गीता का संदेश उन्हें आत्मचिंतन और कर्तव्य-बोध कराता है। जब समाज वर्गों में बंट रहा है, तब श्रीकृष्ण का समभाव और कर्मप्रधान दृष्टिकोण एकात्मता की ओर अग्रसर करता है। जब सत्ता अहंकार में चूर होती है, तब उनका संपूर्ण जीवन सिखाता है कि सत्ता का उद्देश्य जनकल्याण हो, न कि दमन। भगवान श्रीकृष्ण का प्रादुर्भाव केवल एक दिव्य घटना नहीं, बल्कि युगों-युगों तक चलने वाला एक आलोक है। वह चेतना है, जो मोह को काटकर ज्ञान देते हैं। वह मार्गदर्शक हैं, जो युद्धभूमि में भी शांति का संदेश देते हैं। उनका जीवन हम सभी को यह सिखाता है कि जब-जब मोह, भय और अहंकार जीवन को घेर लें, तब श्रीकृष्ण का स्मरण ही वह दीप है जो अंधकार को मिटा सकता है।

गीता में भगवान की घोषणा हर समय पीड़ित लोगों को यह संबल प्रदान करती है कि उसकी सहायता के लिए भगवान कभी भी प्रकट हो सकते हैं। यथा-

**परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥**

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी केवल उत्सव नहीं, वह चेतना है जो प्रत्येक युग में मानव को विवेक, भक्ति और कर्म का समन्वय सिखाकर जीवन को दिव्यता से जोड़ती है। यही श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर्व मनाने का प्रमुख उद्देश्य भी है। ■

धनवन्ता सोइ जानिये, जाके राम नाम धन होय

परमसंत सद्गुरुदेव श्री हंस जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! आपने अभी संत कबीरदास जी का पद सुना। कबीरदास जी कहते हैं कि जीव! तूने भगवान के भजन के बिना हीरे जैसा अमूल्य जन्म व्यर्थ ही गंवा दिया। जीव माया में फँसकर मनुष्य शरीर की कदर को भूल जाता है। वह न तो संतों की शरण में जाकर सच्चा कल्याण करने वाली भक्ति को पूछता है और न कभी मन में हरि नाम-सुमिरण करने का विचार करता है। वह दिन-रात माया को पाने के लिए ही जुटा रहता है।

जीव सच्चे जीवन-साथी भगवान को भूलकर संसार को रिझाने में अपना सारा समय गंवा देता है। यह संसार सेमल के फूल की तरह बताया है। सेमल के फूलों की सुन्दरता को देखकर तोता इस आस से डाली पर आ बैठता है कि यह फल पकने पर खाऊँगा, परन्तु जब सेमल के डोडे को चोंच मारकर देखता है, तो उसमें से रुई निकलने पर सिर धुन-धुनकर पछताता है। इसी प्रकार जीवरूपी सुआ संसाररूपी वृक्ष पर बैठकर विषयरूपी फलों में सुख-शान्ति की इच्छा करता रहता है। जब विषयों में दुःख-ही-दुःख मिलता है, तो पछताता है और रोता है, परन्तु 'अब पछताये होत क्या, जब चिड़िया चुग गयी खेत।' खेत को जब चिड़ियों ने चुग लिया तो रखवाली करने से या पछताने से लाभ ही क्या? जब मनुष्य शरीर भजन के बिना बिता दिया, तो अफसोस करने या पछताने से गई आयु वापस लौटकर तो

नहीं आती। संत कबीरदास जी का कहना है कि संसार एक दुकान है, जिसमें सभी लोग माल खरीदने और बेचने को आये हैं। जिसने परमात्मा का भजन किया है, उसने तो अपना माल चौगुना कर लिया



है, परन्तु जो संसार के नाशवान पदार्थों को पाने की इच्छा करता है, उसने पूँजी को अर्थात् मनुष्य जन्म को गंवाया ही है। जो भजन नहीं करेगा, उसका यह जन्म भी व्यर्थ जायेगा और मरने के बाद उसे चौरासी में जाना पड़ेगा। गुरु नानकदेव जी कहते हैं-

लख चौरासी भ्रमदियां,

मानुष जन्म पायो।

कहे नानक नाम संभाल,

सो दिन नेड़े आयो।

लख चौरासी में भ्रमते-भ्रमते भगवान की कृपा से यह मनुष्य जन्म मिला है। समय धीरे-धीरे बीत रहा है, इसलिए

भगवान के नाम का सुमिरण करो। संसार माया का लोभी है और यहां पर सब लोग ममतारूपी महल को मजबूत बनाने में लगे हुए हैं। सब माया के कारण ही प्यार करते हैं और मोह के कारण ही मनुष्य माया को जमा करने में लगा रहता है। कोई बिरला ही माया-मोहरूपी भूल-भुलैया के महल को तोड़कर बाहर निकलता है अन्यथा सब उसी में फँसे रहते हैं। अमेरिका के प्रेसीडेंट रूजवेल्ट, इंग्लैंड के बादशाह किंग जार्ज हमारे देखते-देखते संसार से कूच कर गये और भी अनेक सेठ-साहूकार चले जा रहे हैं। आखिर वे अपने साथ क्या ले गये? कहने का भाव यह है कि संसार की माया में फँसकर कुछ भी हाथ नहीं लगेगा और अन्त में पछताना ही पड़ेगा। भगवान की भक्ति के लिए यह मनुष्य तन मिला है, इसलिए भक्ति करो।

उठ जाग क्या सुख सोया रे,

काया गढ़ के निवासी।

काया रूपी किले में निवास करने वाले जीव! उठ, जाग और मोह की निद्रा को त्याग कर देख! तेरी पूँजी को पाँच ठग दिन-रात लूट रहे हैं। इसलिए, जागकर भगवान के भजन में लग जा। परमपिता परमात्मा, जिसने मां के गर्भ में भी हमारा पालन किया और अब भी पालन कर रहा है, उसको हमने भुला दिया है। इसलिए, नमक हरामियों की सूची में नाम लिखा जायेगा। संत तुलसीदास जी कहते हैं-

सुत दारा और लक्ष्मी,

पापी घर भी होय।

सन्त समागम हरिकथा,

तुलसी दुर्लभ दोया।।

तुम लोग यू०पी० के रहने वाले हो, तुम्हें अच्छी प्रकार पता है कि अभी-अभी दुर्घटना से कुम्भ मेले में कितने आदमी मर गये। कितनी स्त्रियाँ विधवा हो गयीं, कितने बच्चे अनाथ हो गये। किसी-किसी के घर में तो कुछ भी नहीं रहा, सब-के-सब मर गये। सिन्ध और पंजाब में भी कितना नुकसान हुआ, यह भी आप अच्छी प्रकार जानते हो, परन्तु इतना कुछ होने पर भी आँख नहीं खुलतीं। दुनिया के लोग दिन-रात माया को जमा करने में लगे हुए हैं। क्या सोना जमा करके अपने साथ ले जाओगे? भजन की कमाई जो अंत समय में साथ जाने वाली है, वह कमाई तो कर ही नहीं रहे।

हीरा जैसा अनमोल जन्म कौड़ियों के जमा करने में गँवा दिया। क्या इसी काम के लिए मनुष्य जन्म मिला था? देखो, आकाश में असंख्य तारे दिखाई देते हैं। कई तारों को सूरज से भी बड़ा बताया जाता है। चन्द्रमा भी रात्रि को प्रकाश करता है। अनेक जड़ी-बूटियाँ भी रात्रि को चमकती हैं। बिजली, गैस, लालटेन और दीपक आदि भी रात्रि को प्रकाश करते हैं। इसके अलावा यदि संसार के समस्त पहाड़ों में आग लगा दी जाये, तो भी रात्रि का अंधकार दूर नहीं होगा। कहा है-

राकापति षोडस उगहिं,

तारागन समुदाइ।

सकल गिरिन्ह दव लाइए,

बिनु रवि राति न जाइ।।

जैसे रात्रि का अँधेरा सूरज से ही दूर होता है, वैसे सच्चाई के जानने से ही माया, मोह और अज्ञानरूपी अन्धकार दूर होगा। यह बात जरूर है कि सच्चाई देर में प्रकट होती है और झूठ जल्दी से फैल

जाता है। आम के पेड़ को लगाने के लिए मेहनत की जरूरत पड़ती है, तभी उनसे फल प्राप्त करने की आशा की सकती है। कई पेड़ तो जल्दी फलते और फूलते हैं, परन्तु नष्ट भी जल्दी ही हो जाते हैं।

बीते समय में जितने भी सन्त-महात्मा या महापुरुष हुए हैं, उस समय के लोगों ने उन सबका ही विरोध किया है। सन्त तुलसीदास का काशी के पंडितों ने यहाँ तक विरोध किया कि उन्हें मारने तक के उपाय किये। सन्त ज्ञानेश्वर की बातों को पहले-पहले लोगों ने नहीं माना। गुरु नानकदेव जी का भी काफी विरोध

जब तक मनुष्य को सच्चाई का ज्ञान नहीं होता, तब तक वह झूठ को नहीं छोड़ सकता। आज भी जो लोग झूठ को सत्य समझकर लगे हुए हैं उनका दोष नहीं है, क्योंकि वह झूठ में ही अपना कल्याण समझ बैठे हैं।

किया गया। मन्सूर को शूली पर चढ़ा दिया, शम्श तबरेज की खाल ही खींच ली। कबीरदास जी को भी लोगों ने नाना प्रकार के कष्ट दिये। जब वह सत्संग करते थे, तो लोग उन पर पत्थर फेंकते थे और मारपीट करते थे कि तुम सत्संग मत करो। वह भी उस समय हाथ जोड़कर कहते थे- अच्छा बाबा! अब प्रचार नहीं करेंगे, परन्तु सच्ची बात कहे बिना कैसे रह सकते थे। जैसे-जैसे लोग उनका विरोध करते गये, उनका प्रचार बढ़ता ही गया। एक बार मौलवी, मुल्ला, पंडित तथा पुजारी उनके पास गये और उनसे पूछा- तू मुसलमान होकर हिन्दुओं का गुरु बनता है, पर यह बता कि तू हिन्दू है या मुसलमान? कबीर साहब कहने लगे-

हिन्दू कहो तो हूँ नहीं,

मुसलमान भी नाहिं।

पाँच तत्व का पुतला,

गैबी खेले माहिं।।

न तो मैं हिन्दू हूँ और न ही मुसलमान हूँ, पाँच तत्वों का यह शरीर बना हुआ है, और इसके अन्दर परमात्मा की ज्योति एवं उसका नाम छिपा हुआ है।

जैसे लकड़ी ढाक की,

वैसा यह मन देख।

बामें केसू छिप रहा,

यामें पुरुष अलेख।।

जैसे ढाक की लकड़ी में केसू का फूल छिपा रहता है और अपने समय पर प्रकट हो जाता है, वैसे ही इस शरीर में अलख पुरुष अविनाशी छिपा हुआ है। उसी को जानने के लिए कहता हूँ। आप ही बताओ, इसमें हिन्दू की या मुसलमान की क्या बात है? जब पंडित और मौलवी हर प्रकार से लाचार हो गये, तो उन्होंने राजा धर्मदास से जाकर शिकायत करते हुए कहा- महाराज! काशी में कबीर

जुलाहा हिन्दू और मुसलमान दोनों का दीन (धर्म) भ्रष्ट कर रहा है। वह अपनी जूठन सबको खिलाता है और अपने चरण धोकर सबको पिलाता है। उसे आप सजा देकर अधर्म के कार्य से रोकें।

राजा धर्मदास ने सिपाहियों के द्वारा कबीर साहब को बुलवाकर पूछा- कबीरदास! क्या तुम गुरु बनकर हिन्दुओं और मुसलमानों का दीन खराब कर रहे हो? जो कुछ ये लोग कह रहे हैं, क्या सब सच है? कबीर साहब कहने लगे- राजन! मैं तो किसी का गुरु नहीं बनता, वे लोग ही मुझे गुरु मान बैठे हैं। मैं तो भगवान के सच्चे नाम को स्मरण करने के लिए कहता हूँ जो कि सोलह स्वर और छतीस व्यंजनों से परे है, और सच्चे प्रकाश का ध्यान करना बताता हूँ, जो कि सबके अन्दर है- जहाँ सूरज, चन्द्रमा,

और अग्नि की रोशनी नहीं है। धर्मदास जी कहने लगे कि यदि ऐसी बात है और तुम बता सकते हो, तो मुझे भी अन्दर का प्रकाश और नाम बताओ। कबीरदास जी कहने लगे कि मेरा तो काम ही यही है कि भूले-भटकों को सीधा मार्ग बताऊँ।

कबीरदास जी धर्मदास को अन्दर अलग कोठरी में ले गये और उन्हें सच्चा नाम और सच्चा प्रकाश घट के अन्दर ही बता दिया। राजा धर्मदास जब बाहर आये, तो उन्होंने कबीर साहब को सिंहासन पर बैठा दिया और आप चरणों में गिरकर कहने लगा- हुजूर! आपने कृपा करके मेरे मनुष्य शरीर को सार्थक कर दिया। धर्मदास को कबीरदास के चरणों में साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करते देख मौलवी, पंडित और पुजारी सब ही हैरान होकर सोचने लगे कि हमारी दौड़ तो राजा तक थी। जब राजा ही इनका शिष्य हो गया, तो अब किससे शिकायत की जाए। इसलिये कहने लगे, “धन्य कबीर!” ऐसे महात्मा देखे न सुने! कबीरदास का विरोध करने से ही आज सारे भारत में उनकी वाणियों को बड़े प्रेम से गाया जाता है।

कहने का भाव यह है कि जब तक मनुष्य को सच्चाई का ज्ञान नहीं होता, तब तक वह झूठ को नहीं छोड़ सकता। आज भी जो लोग झूठ को सत्य समझकर लगे हुए हैं उनका दोष नहीं है, क्योंकि वह झूठ में ही अपना कल्याण समझ बैठे हैं। अमेरिका चाहता है कि सारे संसार के लोग हमारे अधीन रहें, रूस भी चाहता है कि सारे संसार के लोग हमारी विचारधारा को मानें, परन्तु ऐसा कब होगा? धन या ताकत से ऐसा नहीं हो सकता। पहले जब भारत में सत्य का राज्य था, तब सारे संसार के लोग भारत को स्वर्ग-भूमि समझते थे, परन्तु आज सत्य को भूलकर

दूसरी ही गति हो गयी है।

आज पन्द्रह रुपये की तनखाह वाला बीस रुपये, पचास वाला सौ रुपये की तथा पाँच सौ रुपये वाला हजार रुपये की इच्छा रखता है। यह काम कर चुका, अब यह करूँगा और यह कर रहा हूँ, बस इसी धुन में लगकर ममता के महल बनाते-बनाते आयु बीत जाती है और अन्त में सब खेलों को अधूरा छोड़कर हरेक मनुष्य मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। स्वप्न का खेल खत्म हो गया। सोचने, विचारने

भगवान का नाम जन्म-जन्म की पूँजी है, जो कि सद्गुरु की कृपा से ही जीव को प्राप्त होता है। वह नाम रुपयों तथा बाहरी धन-दौलत से प्राप्त होने वाला नहीं है। उस नाम की प्राप्ति करने के लिए श्रद्धारूपी धन का होना जरूरी है।

या सिर धुनने से भी अब स्वप्न के पदार्थ नहीं मिल सकेंगे। सारे संसार का धन मिलने पर भी न किसी की चिन्ता मिटी है और न भविष्य में ही किसी की चिन्ता मिटेगी। सिकन्दर बहुत बड़ा बादशाह था। उसने अनेक लोगों का खून बहाकर, अनेक स्त्रियों को विधवा करके तथा अनेक बच्चों को अनाथ करके धन जमा किया, परन्तु मरते समय उसे यही कहना पड़ा कि मेरे दोनों हाथ कफन से बाहर निकाल देना ताकि दुनिया वाले देख लें कि जिस राज्य को भोगने के लिए खून की नदियाँ बहाई थीं, वह आज सब कुछ यहीं छोड़कर खाली हाथ जा रहा है। संत कबीरदास जी कहते हैं-

कबीर सब जग निर्धना,

धनवन्ता नहिं कोय।

धनवन्ता सोइ जानिये,

जाके राम नाम धन होय॥

यह सारा जगत् ही कंगाल है। वास्तव में धनवान् वही है, जिसके पास राम-नामरूपी धन है। धन होने पर भी प्राणी दुःखी रहता है, परन्तु नाम का धनी स्वप्न में भी दुःखी नहीं हाता। मीराबाई भी कहती है-

पायो जी मैंने नाम रतन धन पायो।

वस्तु अमोलक दई मेरे सतगुरु,

कृपा कर अपनायो॥

जन्म-जन्म की पूँजी पायी,

जग का सभी गँवायो॥

भगवान का नाम जन्म-जन्म की पूँजी है, जो कि सद्गुरु की कृपा से ही जीव को प्राप्त होता है। वह नाम रुपयों तथा बाहरी धन-दौलत से प्राप्त होने वाला नहीं है। उस नाम की प्राप्ति करने के लिए श्रद्धारूपी धन का होना जरूरी है। इस संसार में वही मनुष्य धन्य है, जो मनुष्य तन पाकर भगवान के नाम का स्मरण करता है।

जननी जने तो भक्तजन,

कै दाता कै सूर।

नहीं तो जननी बाँझ रहै,

व्यर्थ गंवावहि नूर॥

जो भक्त भी नहीं गरीबों की रक्षा के लिए वीर भी नहीं और दान भी नहीं करता अर्थात् जिसने धन को न तो गुरु सेवा में ही लगाया और न गरीबों को ही दिया, ऐसे पुत्र के जनने से तो जननी बाँझ ही रह जाती तो अच्छा होता। ऐसे अभागे पुत्र को जन्म देकर जननी ने व्यर्थ ही अपना यौवन नष्ट किया। ऐसा पुत्र माँ के यौवन को काटने के लिए कुल्हाड़ा है। जैसे बाँसों के अन्दर अग्नि पैदा होकर बाँसों को जला देती है, ऐसा पुत्र माँ के यौवन को जलाने वाला ही है। पर ऐसा मत समझो कि सब पुत्र गलत ही होते हैं। उसी माँ का जीवन धन्य है, जिसका पुत्र भगवान का भक्त होता है।

सार शब्द जाने बिना, कोई न उतरसी पार

श्री भोले जी महाराज

प्रेमी सज्जनों! बड़ी प्रसन्नता की बात है कि आपके क्षेत्र में बहुत समय बाद यह विशाल सत्संग कार्यक्रम हो रहा है। यहां पर काफी दूर-दूर से बड़ी संख्या में लोग सत्संग सुनने के लिए आये हुए हैं। इनमें से जो लोग जिज्ञासु हैं, जो आत्मज्ञान को जानना चाहते हैं, सत्संग के बाद उन्हें संत-महात्माओं द्वारा आत्मज्ञान भी कराया जायेगा। अभी पिछले दिनों देश के विभिन्न भागों में हमने कई सत्संग प्रोग्राम किये और बहुत से लोगों को जगाते हुये, आत्मज्ञान का प्रचार करते हुए हम आपके शहर में पहुंचे हैं। संतों ने कहा-तुम माया-मोह की नींद में क्यों सो रहे हो, तुम्हें जागना है! जब हम सफर में जाते हैं, तो अपने साथ कितना सामान बांधते हैं। जब हम संसार को छोड़कर जायेंगे, तो हम क्या साथ में ले जायेंगे, उसका हमें पता ही नहीं। हमें वहां की भी तैयारी करनी चाहिये, जहां हमें हमेशा के लिये जाना है। जब हम कहीं जाते हैं, तो पहले वहां की टिकट आरक्षित कराते हैं। अपने साथ सफर के लिये खाना बांधेंगे, बिस्तर बांधेंगे, लेकिन संसार को छोड़कर जाने की यात्रा के लिये हम कुछ नहीं करते हैं। इसीलिये कहा कि जहां हमें जाना है, वहां के लिये भी हमें कुछ सामान जुटाना है। सन्त-महात्माओं के पास जाने से हमको सत्संग मिलता है, जिसके लिये तुलसीदास जी रामचरित मानस में लिखते हैं-

बड़े भाग्य पाइब सत्संगा।

बिनहिं प्रयास होहिं भव भंगा।।

सत्संग हमें बड़े भाग्य से मिलता है, इसलिए उसे हमें ध्यान से सुनना चाहिये। एक राजा था। उसने अपने दरबार में



तीन मूर्तियां मंगवाई। राजा ने कहा कि इन तीनों मूर्तियों में क्या फर्क है, कृपया, यह बताइये। दरबार के लोगों ने कहा कि महाराज! ये तो तीनों एक समान हैं, इनमें कोई भिन्नता नहीं है। तभी राजा का मंत्री बोला कि महाराज! इनमें भिन्नता अवश्य है। उसने एक मूर्ति के कान में धागा डाला, तो वह उसके पेट में चला गया। दूसरी मूर्ति के कान में धागा डाला तो वह दूसरे कान से बाहर चला गया और जो तीसरी मूर्ति थी, उसके कान में धागा मुँह से निकल गया। मंत्री ने बताया-महाराज! कुछ व्यक्ति सन्त-महात्माओं की बातों को सुनकर उन पर मनन करते हैं और कुछ व्यक्ति दूसरी मूर्ति की भांति होते हैं जो अच्छी बातों को सुनकर दूसरे कान से बाहर निकाल देते हैं।

कुछ व्यक्ति तीसरी मूर्ति की तरह होते हैं जो आत्म कल्याण की बातों को सुनते तो हैं, परन्तु वे उन पर अमल नहीं करते, बल्कि सुनी हुई बातों को दूसरों को सुनाते रहते हैं। कई व्यक्ति सत्संग में बैठे हुये हैं, पर उनका मन कहीं और

ही ख्यालों में घूम रहा होता है। इसलिये आपको कौन से प्रकार का व्यक्ति बनना है, यह सोचना चाहिये। हम ऐसे व्यक्ति बनें कि जो सत्संग की वाणी है, वह हमारे हृदय में जाये तथा हम संतों के बताये मार्ग पर चलें। समय-समय पर सन्त-महापुरुष आकर हमें चेताते हैं-

घट ही में उजियारा साधो,

घट ही में उजियारा रे।

हमारे घट के अन्दर, हृदय के अंदर ही प्रभु का प्रकाश है, लेकिन अज्ञानतावश हम उसे बाहर ढूँढ़ रहे हैं। संत कबीरदास जी कहते हैं-

तंत्र मंत्र सब झूठ है,

मत भरमो संसार।

सार शब्द जाने बिना,

कोई न उतरसी पार।।

जितने भी तंत्र-मंत्र हैं, वे सब झूठ हैं और भ्रमित करने वाले हैं। वह सार शब्द क्या है, हमें उसको जानना चाहिए। उस सार शब्द को, भगवान के सच्चे नाम को मनुष्य योनि में ही जान सकते हैं, पशु योनि में यह संभव नहीं।

महापुरुषों के आदर्शों पर चलने से ही कल्याण

माताश्री राजेश्वरी देवी

प्रेमी सज्जनों, अभी महात्मा-
बाईयों ने भजन गाया-

हे दीन बन्धु-भगवन,

सुन लो विनय हमारी।

बहुत अच्छा भजन है। देखो, जब रावण भगवान राम के साथ मुकाबला करने लगा, तो उसने यह प्रार्थना नहीं की। रावण भी मनुष्य ही था और भक्त भी मनुष्य ही हैं, जो किस प्रकार भगवान की वन्दना करते हैं। जो भक्त हृदय से वंदना गाते हैं और प्रेम करते हैं, भगवान ऐसे ही भक्तों के लिये इस संसार में आते हैं।

मैं सत्य कहती हूँ कि नारी का जीवन झूले की तरह कभी इस पार कभी उस पार। नारी का संसार में मकसद क्या होता है? जो महान नारियाँ, महान मातायें होती हैं, वे केवल इस संसार का भार उतारने के लिये ही अपने पुत्रों को जन्म देती हैं, वासनाओं के लिये नहीं। तुम मेरी जीवनी भी देखो, तुम्हारे ही कल्याण के लिये इन विभूतियों ने जन्म लिया है। इनका और कोई मकसद नहीं। इसी कारण से ये तुम्हारे सामने हैं। इनकी आज्ञा में रहोगे, तो जीवन में वह चीज पाओगे जो तुमने कभी भी पायी नहीं होगी। धन-दौलत, पुत्र तथा इज्जत इत्यादि ये सब चीजें तो तुम्हें ऐसे भी मिल सकती हैं, पर जो महापुरुष के पास गुप्त चीज है, आत्मज्ञान है, वह नहीं मिल सकता। वह केवल महापुरुष के सानिध्य में रहने से ही मिल सकता है। जैसे राजा दशरथ की अभिलाषा थी कि मैं दोबारा राम को देखूँ, दोबारा मैं उनका दर्शन करूँ। आप लोग जो वास्तव में भक्त हैं, हमारी बातों पर

अमल करें। एक शिक्षक अपने विद्यार्थियों को किसी विषय को पढ़ाता है और विद्यार्थी यदि अमल ही नहीं करेंगे तो आखिर मास्टर उनको अच्छा नहीं मानेंगे। तुम लोगों के दुःख का कारण यही है कि हम तुम्हारे पीछे अपने आप मिट गये हैं और तुम आज भी वहीं के वहीं, कुँए के कुँए में ही हो, आगे नहीं उठ पाते हो। क्यों? क्योंकि तुम्हारा मन माया में इस प्रकार से जकड़ा हुआ है कि निकलना नहीं चाहते। तुम्हारी भलाई के लिये ये लोग आये हैं। ये दिव्य विभूतियाँ हैं। इनके अन्दर तुम फर्क न समझो। जहाँ तुमने फर्क समझा तो इसमें तुम्हारा ही नुकसान होगा, उनका कुछ भी नहीं बिगड़ेगा। इसलिये इनकी बातों को समझो, ये तुम्हारा ही कल्याण करने के लिये आये हैं। ये कोई और भी काम कर सकते थे, लेकिन आपको जगाने के लिए, ज्ञान देने के लिए उन्होंने अध्यात्म के मार्ग को चुना। इसलिए आप लोग खूब भजन-सुमिरण करो। देखो, भक्त बहुत बड़ा कार्य करते हैं। प्रेम और एकता के साथ हमारी संस्था आगे बढ़ रही है। इसलिए आज कई लोग हमारी संस्था से ईर्ष्या करते हैं। एकता में इतना बड़ा बल है कि हम आपस में मिल-जुलकर बड़े-बड़े कार्यक्रम कर लेते हैं और जब हममें एकता नहीं रहेगी, तो कोई भी कार्यक्रम करना आसान नहीं होगा। परिवार में



ही देख लीजिये। परिवार में जब दस किस्म के आदमी हों, वे सब अलग-अलग खर्च करने लग जायें और दस किस्म की राय देने वाले हो जायेंगे, तो परिवार चल नहीं सकता है। ठीक इसी तरह यह आध्यात्मिक मार्ग भी है। जिस माता की कोख से बड़ी-बड़ी शक्तियों ने जन्म लेकर इस संसार को उज्ज्वल बनाया, प्रकाश दिखाया, गिरे हुये मनुष्य को ऊँचा उठाया। आज उस नारी का, माता का अस्तित्व ही मिटता जा रहा है। सचमुच में जैसे राजा जनक की प्रतिज्ञा भंग हो रही थी। उन्होंने प्रतिज्ञा की थी कि जो सबसे अधिक शक्तिशाली होगा, जो इस शिव जी के धनुष को तोड़ेगा, उसी के साथ मैं अपनी पुत्री का विवाह करूँगा। उनकी अंतरात्मा की पुकार हुई और बड़े-बड़े राजा-महाराजा आये, बड़े-बड़े शूरवीर आये, लेकिन धनुष नहीं टूटा। राजा जनक हताश हो गये कि

मेरी जानकी कुंवारी रह जाएगी, मेरी जानकी अविवाहित रह जाएगी। यदि मुझे पता होता कि आज भारत भूमि वीरों से शून्य हो गई है, तो मैं कभी भी इस तरह प्रतिज्ञा नहीं करता। अब मैं इस प्रतिज्ञा को वापस लेता हूँ। तब गुरु महाराज जी ने कहा कि उठो राम! राजा जनक को जो दुःख है, उसका हरण करो। वह दुःख उनसे सहन नहीं हो रहा है, तुम इस धनुष को तोड़ो और जानकी के साथ विवाह करो। तो यह गुरुजनों की कितनी ऊँची, कितनी बड़ी बात है! धनुष तोड़ने से राजा जनक की प्रतिज्ञा स्वयं पूरी हो गई, जानकी की शादी हो गई। फिर उस जानकी के द्वारा कितनों को शान्ति हुई, कितनों का नाश हो गया और कितनों को फायदा हुआ। इसी तरह से आप लोगों को कभी भी संशय नहीं करना चाहिये। इसलिये महान् शक्तियों की इन लीलाओं में तुम मत आओ। तुम्हें ज्ञान दिया है, ज्ञान से समझो। जब तुम भजन-अभ्यास करोगे, तब शक्तियाँ तो स्वयं तुम्हारे हृदय में दिखाई देंगी।

आप लोग सब अपने-अपने क्षेत्रों में जायें। जो भी आपकी श्रद्धा हो, भाव हो, अपने परिवार का निर्वाह करते हुये जो भी सेवा कर सकें, वह करें। हम यह भी नहीं कहते कि अपने घरों को झाड़-झूड़ के सेवा में दे दो। भक्त की श्रद्धा ही हमारे लिये बहुत बड़ी चीज है। मैं सत्य कहती हूँ कि सच्चे हृदय से नाम का सुमिरण करें। नाम के सुमिरण का असर उसके अड़ोस-पड़ोस में इतना फैलेगा कि प्रोग्राम के लिए बहुत मेहनत करने की जरूरत नहीं पड़ेगी। स्वतः ही लोग हमारे पास आयेंगे। स्वतः ही तुम्हारे आचरण से लोगों के जीवन में परिवर्तन होगा। भक्त की सेवा और भक्ति से समाज

पर बहुत असर पड़ता है। इतिहास में अनेक ऐसे भक्तों की कहानियाँ आती हैं, जिन्होंने भगवान के लिये अपना कलेजा दिया। तुम लोग काफी दिनों से सत्संग सुन रहे हो। तुम्हें तो इतना सत्संग मिला कि उसमें पूरी तरह घुट गये, लेकिन सत्संग पर तुम अमल नहीं करते हो।

एक राजा था और वह राजा दान, तीर्थ, व्रत, पूजा, पाठ, साधु-फकीरों तथा अतिथियों की बड़ी सेवा करता

जो भी आपकी श्रद्धा हो, भाव हो, अपने परिवार का निर्वाह करते हुये जो भी सेवा कर सकें, वह करें। हम यह भी नहीं कहते कि अपने घरों को झाड़-झूड़ के सेवा में दे दो। भक्त की श्रद्धा ही हमारे लिये बहुत बड़ी चीज है।

था, लेकिन राजा की कोई सन्तान नहीं थी। जिस राजा की सन्तान नहीं होती है, तो शास्त्र में बताया कि वह राजा नर्क का अधिकारी बनता है। तो राजा यही सोचकर अपना धन साधु-संतों की सेवा में लगाता था। राजा हर एक साधु-संत की सेवा करता था। एक बार नारद जी का भी वहाँ आना हुआ। राजा ने नारद जी की बहुत सेवा की। राजा ने पूछा कि तुम कहाँ से आये? नारद जी ने कहा कि मैं विष्णु भगवान के पास से आया हूँ। राजा बोला कि आप स्वयं विष्णु भगवान के पास इस जीते-जागते शरीर से जाते हैं, लेकिन हमने तो सुना है कि भगवान के धाम में तो लोग शरीर छोड़ कर जाते हैं। क्या आप भगवान के पास इसी शरीर से जाते हैं? नारद जी ने कहा कि हाँ! भगवान की और गुरुजनों की हमारे पर बहुत महान कृपा है। तब राजा ने कहा कि भगवान विष्णु से मेरी भी एक प्रार्थना कर देना कि क्या इस

जिन्दगी में मेरी कोई सन्तान भी होगी? नारद जी ने कहा कि विष्णु भगवान से मैं आपकी इस फरियाद को जरूर कहूँगा और हो सका, तो मैं वरदान माँग के भी लाऊँगा। नारद जी, जब भगवान के पास पहुंचे तो मृत्युलोक के सब हालचाल भगवान के सामने पेश किये। जैसे जो मेरे अच्छे और समझदार महात्मा होते हैं, वे मुझे बताते हैं कि माँ फलाँ जगह इतना ज्ञान हुआ, फलाँ जगह ऐसा भक्त, ऐसा चाहता है। मतलब तुम्हारा सारा विवरण हमको बताते हैं कि ऐसे-ऐसे भक्त हैं, ऐसे आपकी सेवा करते हैं। इनके द्वारा सब खबर हमको मिलती रहती है। इसी तरह से नारद जी ने कहा कि महाराज एक राजा है, जो सबकी बड़ी सेवा करता है। जो भी उसके पास जाता है, वह अपना सारा धन दान-पुण्य में लुटाता है। क्या उसके भाग्य में सन्तान भी है? भगवान विष्णु ने कहा कि नारद जितने तुम्हारे सिर के बाल हैं, इतने जन्म भी अगर उसको मिलेंगे, तो भी उसके भाग्य में कभी भी सन्तान नहीं है।

नारद जी ने कहा- अच्छा, सचमुच में यह बात है महाराज? क्या आप उस पर कृपा भी नहीं कर सकते? भगवान ने कहा कि नहीं, उसके सन्तान ही नहीं है। दुबारा जब जाते हैं नारद जी, तो उसको भगवान का वह वचन सुनाते हैं और फिर अपना भ्रमण करने के लिये चले जाते हैं। इसके बाद एक फक्कड़ साधु आया, वह फक्कड़ के लिबास में था। वह कहता है कि चार रोटी दे दो और चार पुत्र ले लो। चार रोटी दे दो और चार पुत्र ले लो। इसलिये हमारे बुजुर्ग लोग घर गृहस्थ में कहते हैं कि भाई, गृहस्थों की परीक्षा के लिये भगवान न जाने कब आयेगा। न जाने कौन शक्ति कब आयेगी, इसलिये

घर में बर्तन कभी खाली नहीं होने चाहिये, उन बर्तनों में हमेशा खाना रहना चाहिए। हमारे नाना-नानी, माता-पिता अपनी लड़कियों को शिक्षा देते हैं कि बेटी, जब तू अपनी ससुराल जायेगी, तो घर को कभी खाली नहीं रखना। क्या जाने कोई अतिथि या फकीर आ जाये और उसको भूख लगी हो। एकदम तो रोटी बन नहीं सकती है और क्या जाने उसी रोटी से उसकी जान बचनी है। इसलिये कहते हैं कि गृहस्थी लोगों को साधु, फकीर, अतिथि आदि का सत्कार जरूर करना चाहिये। तो इसी तरह से वह राजा से कहता है कि जितनी रोटी है, उतनी रोटी दे दो और उतने ही पुत्र ले लो। राजा ने रानी के पास जाकर कहा कि रानी, क्या तेरे घर में रोटी भी है? एक फकीर कहता है कि रोटी दे दो मुझे। उसको भूख लगी है, दे दो उसको रोटी। उन्होंने यह इच्छा भी नहीं की कि हमारे पुत्र हो जायेंगे। कहा, वह भूख से व्याकुल है, दे दो उसको रोटी। रानी ने दासी के साथ जा करके उस फक्कड़ को चार रोटी दे दी। उसके बाद कुछ साल में उसके चार पुत्र हो गये।

राज दरबार में चारों राजकुमार खेलने लगे। चारों राजकुमार बहुत सुन्दर कपड़े पहने हैं, दास-दासियाँ उनको खिला रही हैं और हँस रहे हैं। इतने में नारद जी आ जाते हैं, बच्चों को खेलते देखते हैं, रानी-राजा देख रहे हैं और खुशी से हँस रहे हैं, तो कहा कि ये किसके चार पुत्र हैं? राजा ने कहा कि महाराज यह सब आपके आशीर्वाद का फल है। आपके ही आशीर्वाद दिये हुये ये चार पुत्र है। अब देख लीजिये नारद जी कितने बड़े भक्त थे जो स्वयं शरीर से ही भगवान विष्णु के पास जाते हैं जिसे मरने की

जरूरत नहीं थी, तो वही नारद विष्णु भगवान पर नाराज हो गये कि कपटी है भगवान, स्वयं शक्तिवान है और मुझसे झूठ बोला देता है, हमारा अपमान करा देता है। तब भगवान विष्णु से कहा कि तुम्हारे दरबार में न्याय नहीं है। स्वयं तो शक्ति हो और हम जैसे को झूठा बना देते हो। एक फक्कड़ के द्वारा चार बेटे पैदा कर दिये और मेरा अपमान करा

उन महान पुरुषों के सिद्धान्तों पर चलो।
जिन महान पुरुषों ने सचमुच ही दूसरों की भलाई के लिये बड़ी-बड़ी कुर्बानी की है। तो उन महान पुरुषों के आदर्शों पर चलो। देखो, मेरा तो यह कहना है, मैं तुमसे यह कहती हूँ कि अपने धर्म से चिपट कर रहो। अपने धर्म में ही रहो।

दिया। भगवान विष्णु कराहते हुए बोले- नारद, मेरे पेट में बहुत तेज दर्द हो रहा है, पहले इसका इलाज कराओ, उसके बाद मैं तुम्हारी बातों का जवाब दूंगा। नारद जी ने पूछा- भगवन, आपके दर्द का इलाज क्या है? भगवान बोले कि कोई मेरा प्रिय भक्त अपना कलेजा दे दे, तो मेरा दर्द दूर हो सकता है। नारद जी तुरन्त छुरा और कटोरा लेकर निकल पड़े, उन्हें जो मिले उसीसे कहते हैं कि भगवान विष्णु के पेट में बहुत तेज दर्द हो रहा है, यदि कोई अपना कलेजा दे दे तो उनका दर्द दूर हो सकता है। घूमते-घूमते उन्हें वही फकीर मिल जाता है। फकीर ने पूछा- नारद जी, क्या बात है ? नारद जी ने सारी बात बताई तो उस फकीर ने अपना कलेजा निकालने के लिए ज्योंही छुरा उठाकर मारा, भगवान विष्णु प्रकट होकर उसका हाथ पकड़ लिया और कहने लगे- नारद, ऐसे भक्तों

कि बच्चों को मुझे पूरा करना पड़ता है। कलेजा तो तुम्हारे पास भी था, लेकिन तुम्हारे मन में ऐसा भाव नहीं आया।

महान उसको कहते हैं जो स्वयं को माया से सुरक्षित रखता है। तो इसी तरह से मनुष्य बड़ा अशान्ति का जीवन व्यतीत कर रहा है। इसलिए शान्ति कहाँ से आयेगी? अपने हृदय से शान्ति आयेगी। इसलिए उन महान पुरुषों के सिद्धान्तों पर चलो। जिन महान पुरुषों ने सचमुच ही दूसरों की भलाई के लिये बड़ी-बड़ी कुर्बानी की है। तो उन महान पुरुषों के आदर्शों पर चलो। देखो, मेरा तो यह कहना है, मैं तुमसे यह कहती हूँ कि अपने धर्म से चिपट कर रहो। अपने धर्म में ही रहो। पर धारण क्या करना है? द्रौपदी का भी तो कोई धर्म रहा होगा, पर धारण तो उसे करना है, जो रक्षा करता है। जैसे द्रौपदी ने भगवान के नाम को धारण करके स्वयं पाण्डव और कौरव के बीच में अपनी रक्षा की। तो उसको कहते हैं धर्म, जो माँ जानकी ने राक्षसों के बीच रह करके, अशोक वाटिका में रह करके, जंगल के बीच रह करके, स्वयं अपने धर्म की, स्वयं अपनी रक्षा की। इसलिए कहते हैं धर्म तो रक्षा करता है। धर्म तो धारण करने की चीज है। जब हम अपनी माता के गर्भ में थे, तब हमारा क्या धर्म रहा होगा? जब हम यहाँ से चले जायेंगे, तब हमारा क्या धर्म रहेगा? कहा है-

**न हिन्दू बनाया न मुसलमान बनाया।
खुदा ने सिर्फ एक इन्सान बनाया।।**

हम सब मानव हैं और मानव के अन्दर, जीने की शक्ति सबके अन्दर एक है। इसलिए उस शक्ति को जानो, वही हमारा वास्तविक धर्म है। वही शक्ति हमारी रक्षा करेगी।

संतों की वाणी अटपटी, झटपट लखे ना कोय

माताश्री मंगला जी

प्रेमी सज्जनों! नानक देव जी धान के खेत में धान की पौध लगा रहे थे, एक भक्त ने उनसे पूछा कि भगवान को कैसे प्राप्त करें? तो उन्होंने धान के पौधे उखाड़ कर दूसरी जगह लगाते हुए कहा कि इधर से उखाड़ कर उधर लगा दो। यानी अपने मन को संसार से हटाकर भगवान के चरणों में, भगवान के ध्यान में लगा दो, प्रभु मिल जायेगा। इसीलिए कहा-

संतों की वाणी अटपटी,
झटपट लखे ना कोय।
जो झटपट लखे,
तो चटपट दर्शन होय।।

जब अध्यात्म ज्ञान हो जाता है, तो हमें जर्रे-जर्रे में भगवान की झांकी दिखती है। इसीलिए अपने जीवन को व्यर्थ मत गंवाओ। एक-एक सांस अनमोल है। दया, धर्म, भक्ति- यह सब तो भगवान ने ही दिए हैं हृदय में। प्रभु भक्ति में हम सभी को डुबकी लगानी चाहिए। गंगा जी में जाकर के हम अपने पाप धोते हैं, हरिद्वार में श्री हंस जयंती का कार्यक्रम है, आप सब हरिद्वार के कार्यक्रम में मिलेंगे। हरिद्वार में नहाने से शरीर का मैल तो धो देंगे, पर मन के मैल को धोने के लिए तो हमें अध्यात्म की साधना को ही अपनाना पड़ेगा। जो संतों की वाणी होती है, वह जल्दी समझ में नहीं आती, वह तभी समझ में आती है, जब हम उस पर विचार करते हैं। इसलिए समय रहते संतों की वाणी को समझें, नहीं तो यहाँ से खाली हाथ चले जाना है।

आया है सो जाएगा,
राजा रंक फ़कीरा
एक सिंहासन चढ़ि चला,



एक बंधा जाए जंजीर।।

यह पाप-पुण्य की बात है, तो जीवन में एक चीज़ अपना लो, एक चीज़ को हमें खोजना है। जब रात को अंधेरा हो जाता है, तो रोशनी जलानी पड़ती है। सुबह जब सूर्य भगवान आते हैं, तो सब रोशनी फीकी पड़ जाती है; कोने-कोने में भगवान सूर्य का प्रकाश फैल जाता है, ऐसे ही अध्यात्म का ज्ञान भी है, जब गुरु की कृपा हो जाती है, तो हृदय के कोने-कोने में हम भगवान की मौजूदगी महसूस करते हैं। हमारे जीवन में संत ना होते, तो क्या हमारे इस जीवन में ज्ञान की रोशनी हो सकती थी। हम बाल अवस्था में स्कूल जाते हैं, तो शिक्षा को प्राप्त करते हैं। एक दिन वही शिक्षा प्राप्त कर करके हम शिक्षक बन जाते हैं; फिर हम अन्य बच्चों को शिक्षित करते हैं। ये ज्ञान और शिक्षा की परंपराएं सनातन काल से चली आ रही हैं। इतना बड़ा महाभारत का युद्ध हुआ, इतने बड़े युद्ध में भी कृष्ण भगवान ने अर्जुन को ज्ञान दिया। अर्जुन किंकर्तव्यविमूढ़ हो

गया था। भगवान कहते हैं कि अर्जुन तू कमज़ोर मत पड़, तेरे साथ मैं हूँ। इसीलिए आजकल जो फोटो छपती है भगवान कृष्ण और अर्जुन की, उसमें रथ में दोनों अध्यात्म के ज्ञान की चर्चा कर रहे हैं। वह अध्यात्म का ज्ञान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को युद्ध के क्षेत्र में दिया। उन्होंने कहा कि हे अर्जुन, तू दसों इंद्रियों से तो युद्ध कर और ग्यारहवें मन से तू मेरा सुमिरन कर। अर्जुन भगवान की आज्ञा में रहा। आजकल तो थोड़ी-सी शिक्षा प्राप्त कर लेते हैं, तो इतना तर्क-वितर्क करते हैं कि मत पूछो। हमारे बाई जी, महात्मा जी बताते हैं कि जब समाज में जाते हैं, तो बच्चे बहुत प्रश्न पूछने लग गए हैं। अर्जुन को भगवान ने कहा कि अर्जुन, अब तू भगवान के नाम का सुमिरन कर। वह नाम क्या नाम है, वह जो गुरु महाराज जी प्राणों में नाम का बोध कराते हैं; जो भगवान बुद्ध ने भी जपा। हम समझते नहीं इक्कीस हज़ार छह सौ बार हम दिन भर में सांस लेते हैं; भजन तो बहुत गाते हैं कि सांसों की

माला में सुमरू मैं हरि का नाम। हम गाते भी हैं, भजन सुनते भी हैं; पर वह क्या है कि जिससे हम उन सांसों की माला में सुमिरण कर सकें।

जितने भी तीर्थ स्थानों में हम जाएंगे, तो हमें यही पता चलता है कि यहां महापुरुषों ने भक्तों को अध्यात्म ज्ञान की शिक्षा दी, अध्यात्म का ज्ञान दिया गया; तो वह ज्ञान सबके अंदर है, शरीर के अंदर यह सांस चल रही है, इसके अंदर भी वह आत्मशक्ति है। पर हमने संसार में रहकर के माया के पर्दे से आंखें बंद कर रखी हैं, जिस तरह आंखों में मोतियाबिंद हो तो हम डॉक्टर के पास जाते हैं, डॉक्टर थोड़ी देर में ऑपरेशन करता है और उस झिल्ली को हटा देता है। जैसे ही वह झिल्ली हटती है, आंखों से आपको स्पष्ट दिखने लग जाता है। ऐसे ही सद्गुरु भी हमारे जीवन के उस अज्ञान के अंधकार को मिटाते हैं और जब अंधकार मिट जाता है, तो स्वयं ही ज्ञान का प्रकाश प्रगट हो जाता है। यह जो सत्संग किया जाता है। सत्संग क्या है संतों की वाणी। कई बार घर में समय नहीं मिलता, वेद-शास्त्र पढ़ने का, रामायण पढ़ने का, गीता पढ़ने का, लेकिन जब संतों की वाणी सुनते हैं, तो कोई-कोई भेद खुल जाता है। इसीलिए कहा है कि सत्संग-भजन जीवन का सार है।

किसी को पता नहीं है कि कब जाना है; आने का समय तो बता देंगे, लेकिन जाने का समय कोई नहीं बताता। जो समय हमारे पास है, हम उसको क्यों नहीं भजन-कीर्तन-सेवा में लगायें, जिससे हमारा यह जन्म भी सुधर जाएगा और आगे का भी जन्म सुधरेगा। प्रेमी सज्जनों, अध्यात्म ज्ञान एक ऐसा सहारा है जो हमको दुनिया से अलग

बताता है। समाज में एक अलग प्रवृत्ति करता है, जिस तरह कीचड़ में कमल खिलता है, उसी तरह हमें अध्यात्म मार्ग ज्ञानी बना देता है। और वह सत्संग सुनने से, संतों की वाणी सुनने से पहले समझ नहीं आता है। इसीलिए कहा-

संतों की वाणी अटपटी,

झटपट लखे ना कोय।

जो झटपट लखे,

तो झटपट दर्शन होय।

एक साधु महाराज के पास बच्चे

इस समारोह में हज़ारों-हज़ार लोग भंडारा कर रहे हैं चार दिन से; कोई भक्त खिला रहा है, कोई बना रहा है, कोई बांट रहा है; सब काम हो रहा है; परन्तु सबका भाव यही है कि करते हो आप भगवान, मेरा नाम हो रहा है।

पढ़ते थे, तो एक दिन गुरु महाराज ने कहा कि जाओ मेरे ये शालिग्राम हैं, इनको नहला कर ले आओ। अब बच्चे होते हैं बच्चे, चिकने शालिग्राम जी को वे नहलाते-नहलाते नदी में चले गए। शालिग्राम जी नहलाते समय नदी में गिर गये, तो बच्चे सोचने लगे कि गुरु महाराज जी अपने शालिग्राम मांगेंगे तो क्या जवाब देंगे। बच्चे बहुत चतुर होते हैं, उन्होंने क्या किया शालिग्राम जी जैसा एक जामुन का फल तोड़ के ले आए और पूजा स्थान पर रख दिया। शालिग्राम को जब गुरु जी ने छुआ तो बहुत मुलायम लगा; उन्होंने कहा यह तो शालिग्राम नहीं है; तो बच्चे क्या कहते हैं-

पुनि पुनि चंदन पुनि पुनि पानी।

शालिग्राम जी सड़ गए तो हम क्या जानी।।

महाराज जी, हमने बार-बार चंदन लगाया, बार-बार स्नान कराया; तो

शालिग्राम जी सड़ गए, तो हम क्या करें? यह होता है गुरु-शिष्य का बंधन; क्योंकि कहा गया है-

गुरु को कीजिए दंडवत,

कोटि कोटि प्रणाम।

कीट ना जान भृंग को,

गुरु कर ले आप समान।।

गुरु महाराज जी भी अपने शिष्य को ठोकते-बजाते रहते हैं, जिस तरह कुम्हार जब बर्तन बनाता है, तो वह अंदर से हाथ सहारा देकर ऊपर से थपकी से ठोकता है ताकि घड़ा कहीं कमजोर न रह जाए। इसी प्रकार गुरु भी अपने शिष्य को अपने समान ज्ञानी बनाने के लिए उसे ज्ञान का सहारा देकर ऊपर पर से ठोकता रहता है। दुःख और सुख हमें जीवन में मिलते रहते हैं। इसलिए यह जो मानव जीवन है, इसे समझने की जरूरत है।

बड़े भाग मानुष तन पावा।

सुर दुर्लभ सद्ग्रंथन्हि गावा।।

सौभाग्य से यह समय मिला है, इसे सत्संग में लगाइए, गुरुवाणी में लगाइए और देखिए थोड़ा- सा सुनने के बाद ही बहुत तरह का एक भार उतर जाता है। जीवन तो यही है, चाहे हम राम का जीवन लें, चाहे भगवान श्रीकृष्ण का लें, चाहे किसी का भी ले-लें, वे महापुरुष हमारे जीवन को बनाने के लिए, जीवन को समझाने के लिए आए। इसीलिए तो कहा-

कलियुग केवल नाम आधारा।

सुमिर सुमिर नर उतरहिं पारा।।

इस अंधेरे युग में एक प्रभु नाम की ज्योति ही हमारे जीवन को बचा सकती है। आप लोग भाग्यशाली हैं जो बार-बार मौका मिलता है सत्संग सुनने का और सत्संग सुनने के बाद पल्ला झाड़ के मत जाना, कुछ शब्द अपने जीवन में

डालिए। अभी राजा जी सुना रहे थे कि भाई, भाई का दुश्मन है कलिकाल में, कोई पुत्र पिता का। आज जब हम लोग दर्शन दे रहे थे, तो एक माताजी कहती है कि मेरे चार बेटे हैं और उन्होंने मुझे घर से निकल दिया है; मुझे बड़ा दुःख हुआ। मैंने कहा कि हमारा इतना बड़ा घर है, यहां आ जा तू; इस घर में तो सबके लिए जगह है। बहुत-सी माताएं हैं, यहां आ जाती हैं। कोई गरीब है, कोई दुःखी है, चलो आश्रम की ओर। आश्रम का अर्थ ही है आश्रय देना। और आश्रय तभी मिलता है, जब प्रभु की कृपा हो जाती है। इसलिए सत्संग सुनने के बाद अपने व्यवहार को बदलिए, आचरण को बदलिए, अपने माता-पिता की सेवा कीजिए। जिन्होंने बचपन में तुम्हें पाला है, जिन्होंने तुम्हारी हर इच्छा पूरी की है, हर तरह की तुम्हारी गंदगी को साफ किया है; एक बालक की कितनी ज़िम्मेदारी होती है; यह सब तुम्हारे माता-पिता ने किया है। लेकिन जब तुम लायक बन जाते हो, जब बड़े हो जाते हो, तो उन माता-पिता को दूर कर देते हो। यह भावना नहीं होने चाहिए। एक दिन हम सबने भी वृद्ध हो जाना है, आधे वृद्ध तो हो ही गए, सबने डंडी लेकर के चलना है, कोई जवान नहीं हो रहा है, सबने वृद्ध बनना है; तो सेवा का पाठ सीखिए। यहाँ इस समारोह में हज़ारों-हज़ार लोग भंडारा कर रहे हैं चार दिन से; कोई भक्त खिला रहा है, कोई बना रहा है, कोई बांट रहा है; सब काम हो रहा है; परन्तु सबका भाव यही है कि करते हो आप भगवान, मेरा नाम हो रहा है। नाम किसका होता है, जो करा रहा है; करता पुरुष जो है वो सबकी सुन रहा है, सबको देख रहा है। हम जो भी कर्म करेंगे, हमें उसे ही काटना है। हम जैसा

बीज बो रहे हैं, आज आगे हमने उसकी ही फसल को काटना है। अगर हम सुंदर कर्म अपने लिए कर रहे हैं तो हमने ही भोगने हैं; और अगर हम किसी के साथ पाप कर रहे हैं, किसी के साथ गलत कर्म करें, तो वो भी हमने ही भोगने हैं। इसलिए भाई, भय बिनु न होई प्रीत। भय इसीलिए दिया जाता है कि हम

क्या ऐसी अनुपम शक्ति है गुरु महाराज जी की; इसलिए खुले हृदय से समाज में जाओ, सबके दुःखों को दूर करो, सबको अंधकार से प्रकाश की ओर लाओ, वही सत्य है जीवन में।

अपने प्रभु को समझें। इस संसार में भगवान के अनेक नाम हैं किन्तु कबीर कहते हैं कि उनसे मुक्ति नहीं होगी-

कोटि नाम संसार में,

ताते मुक्ति ना होय।

आदि नाम जो गुप्त जप,

बूझे बिरला कोय॥

उस आदि नाम को हमने जानना है। जिसका उपदेश भगवान शंकर आदि महापुरुषों ने अपने समय में दिया। वह अध्यात्म का ज्ञान दिया, उसी से हमारा कल्याण होना है। इसलिए आपलोग यहाँ से झोली झाड़ के मत जाना, ज्ञान की बातों को अपनी गांठ में बांध के जाना; जो हमने दो दिन में सुना है, वह हम जीवन में थोड़ा भी अमल करेंगे, तो हमारा जीवन धन्य हो जाएगा। हम में से कोई प्रह्लाद बनेगा, हम में से कोई अर्जुन बन सकता है। वे भी मनुष्य शरीर में ही थे। पर शिक्षाओं से, कर्म से, उन्होंने अपने जीवन को महान बनाया। आप सबकी भावना है और हम सब परिजन भी श्री भोले जी महाराज की लंबी आयु

के लिए गुरु महाराज जी से प्रार्थना करते हैं। देखो, बचपन से उनका जीवन ऐसा ही है। गुरु महाराज जी ने जो नाम रखा, वह सही रखा। एक दिन मनोज को मैंने कहा कि तुम कितने साल के हो गए। अब तो वो भी ससुर बन गए। वे 16-17 साल की उम्र में दरबार में आए और उनका बड़ा भाग्य था कि जो श्री माता जी का सानिध्य मिला। श्री माता जी ने उनको हर पल शिक्षा दी जो आजीवन काम आने वाली है। अभी भी जब हम बैठते हैं, तो वही समय याद करते हैं कि देखो श्री माता जी ऐसा करते थे, ऐसा कहते थे; क्योंकि जो उत्तम समय होता है, वह हमारे जीवन में हमेशा याद रहता है; दुःख भी याद रहता है, सुख भी याद रहता है। पर सुख याद करके मनुष्य का जीवन भ्रमित हो जाता है और जब दुःख याद रखता है, तो वही दुःख हमें मजबूत बनाता है, वही हमें भक्ति और ज्ञान की ओर बार-बार खींचता है। ऐसे बहुत से भक्त हैं, बाई जी-महात्मा जी हैं जो 50-50 साल से इस जीवन को जी रहे हैं; कोई 40 साल से जी रहे हैं, तो क्या ऐसी अनुपम शक्ति है गुरु महाराज जी की; इसलिए खुले हृदय से समाज में जाओ, सबके दुःखों को दूर करो, सबको अंधकार से प्रकाश की ओर लाओ, वही सत्य है जीवन में। खूब भजन सुमिरण करें, वही साथ जाना है; क्योंकि सिकंदर जैसे ने भी कहा कि जब मैं इस दुनिया से जाऊं तो मेरे दोनों हाथ कफन से बाहर निकाल देना ताकि संसार के लोग जान सकें कि इतना बड़े साम्राज्य का मालिक इस संसार से खाली हाथ चला गया। तो इस प्रसंग से आप थोड़ी भी शिक्षा प्राप्त करेंगे तो अपने जीवन को धन्य बना सकते हैं। सभी को दुआ आशीर्वाद, खूब भजन सुमिरण करें।

GOD COMES TO PROTECT HIS DISCIPLES

MATA SHRI MANGLA JI

Dear Premies, Saint Tulsidas said:

*When righteousness is low,
And arrogant, mean and evil
men are many.*

*God returns to earth in a
human form, To alleviate the pain
of his disciples.*

Whenever righteousness on earth reaches a low level then great divine powers come to earth to re-establish it. Actually this righteousness doesn't totally fade but at times gets engulfed by clouds of ignorance. Religion is always there but man makes mistakes in learning and following it.

Whenever mankind leaves this spiritual path and chooses the way of sin, then the great powers come to motivate him to follow the path of religion. In Treta Yuga there was only one Ravan but there are scores of such Ravans today.

In Dwapar Yuga there was one Dushasan who insulted Draupadi, but today we find such people in every neighbourhood. Does this indicate that righteousness is firmly established or is on the decline? A sensible person would say that religious faith is indeed declining. In such dark times, we need Saints, who can reaffirm the Divine Knowledge. One can get this Knowledge only from Saints. That is why it is said:

The sky on fire,



*And fireballs raining
everywhere.*

*Without the presence of
Saints,*

The world would be no more.

Like the rest of us, the Saints take birth in a family. The life of an ordinary person has limited effects on others but for Saints, their family includes the entire world. Those who remember Him, are surely protected. We are indeed fortunate to be near Shri Guru Maharaj Ji and to learn Self Knowledge from him. It is said:

*Our teacher gave us the plant
of Holy Name,*

*It cannot be cut or burnt,
This plant stays evergreen.*

One's material wealth may get stolen and the longevity of life itself is uncertain. You may leave a lot of wealth for your children but if they are unworthy then they will

waste it in bad deeds. So Saints tell us to use our life savings in earning spiritual wealth. This wealth will help us in our afterlife. In these dark times, we should seek Shri Guru Maharajji's shelter. Under his guidance learn Divine Knowledge, practise the teachings regularly and pass these values on to the next generation. This will lead to inner peace. One may be detached during a cremation ceremony of a dear one, but soon after people return to their worldly chores. Those whom we call friends and family are with us for a short duration in this world. In the path henceforth, we travel alone.

So we should amass great amount of spiritual wealth through meditation that it may benefit us in this forward journey. One should not waste this precious life in worldly pleasures and instead step

forth on the path of righteousness and spirituality. We find this life path by entering the sanctuary of Shri Guru Maharaj Ji and by following his instructions. We should wholeheartedly (physically, materially and mentally) submit ourselves on this path with full devotion.

Today we are celebrating the birth anniversary of Shri Hans Ji Maharaj. Everyone talks about world peace today. But they have no means to manifest this change. Shri Hans Ji Maharaj faced many problems when he sowed the seeds of peace. But Saints face these obstacles unswervingly, to share a sublime divine nectar in this world through which wilful men can truly benefit by following this path.

You heard about the cyclone in Orissa. Saints have unitedly indicated that a very bad time for mankind is about to come where there will be destruction and catastrophes all around.

Today some disciples came from Jammu. They said that there was a bomb explosion in the train carriages in front of them. An ordinary man was going home and had purchased a basket of apples for his family. Hidden inside that basket was a bomb that exploded near Pathankot. Many people were injured in that explosion but our disciples were miraculously saved and are present in this spiritual gathering today. Through such events we learn how Saints

give protection to their disciples.

***No one can kill him,
Whom God Himself protects.***

God truly looked after this disciples, whether it was Draupadi, Bhilni or Kevat. Whenever disciples called for help, God came to offer protection. In our holy books it is written that a time of great destruction will be unleashed in Kali Yuga (dark age). As we look around and study the daily events, we notice that this time has just about arrived.

The spread of Self Knowledge is important for the development of this nation. This same thought was put forth before you all by the Chief Minister of Sikkim, Pavan Kumar Chamling Ji. In every country, man is thirsty for knowledge today. People from different spheres of life visit us; rich, famous, powerful and poor. However, they all agree that wealth cannot lead to inner peace. First we should seek Divine Knowledge from Shri Guru Maharaj Ji, and then by performing regular meditation we find this peace.

Vedvyas Ji tells Dhritrashtra: The great Mahabharat war is about to start in Kurushetra. I will bestow you with divine sight that you will be able to see this war from distance while being present in the far city of Indraprastha. Dhritrashtra replies that he doesn't want to see his friends, family and sons die with his own eyes. Then Vedavyas Ji gives this miraculous sight to king's driver,

Sanjay, who then started sharing the events of the war with the king verbally. In Dwapar Yuga, what was that divine sight that Sanjay could see everything from such a great distance. At the same time when Lord Krishna revealed the Self Knowledge to Arjuna then Sanjay couldn't partake it. Apart from Arjun, no one else could get that Knowledge.

Actually during the war, Arjuna prayed to Krishna with a pure heart and asked to be shown the right path. Then Lord Krishna gave him Self Knowledge. Many Saints came to this world, but without this Self Knowledge we cannot identify them.

There are four Ram in this world,

Three of them (Ram, Parshuram and Shaligram) we know.

Last Ram (Atmaram) is the essence,

On that you should meditate.

Through these gatherings, divine forces spread the Holy Knowledge to so many people. Today the entire world talks of unity but Shri Maharaj Ji spoke about it so many years ago. To establish this unity, world teacher Shankaracharya performed many acts. He constructed mathas (religious sects) to unite the four dhaams (pilgrimages). The solution for this inner peace was taught by Shri Maharaj Ji, but then why is man not at peace? Because he has distanced himself from spirituality.

श्रीकृष्ण का जीवन सिखाता है जीने की राह

प्रबन्धन गुरु कहें, जगतगुरु कहें, गिरधारी कहें या रणछोड़। भगवान कृष्ण के जितने नाम हैं, उतनी ही कहानियां हैं। जीवन जीने के तरीके को अगर किसी ने परिभाषित किया है, तो वो श्रीकृष्ण हैं। कर्म से होकर परमात्मा तक जाने वाले मार्ग को उन्होंने ही बताया है। संसार से वैराग्य को सिरे से नकारा। कर्म का कोई विकल्प नहीं, ये सिद्ध किया। श्रीकृष्ण

कहते हैं कि मैं हर हाल में आता हूं, जब पाप और अत्याचार का अंधकार होता है, तब भी तथा जब प्रेम और भक्ति का उजाला होता है तब भी। दोनों ही परिस्थिति में मेरा आना निश्चित है। वैसे तो भगवान श्रीकृष्ण का संपूर्ण जीवन ही एक प्रबंधन की किताब है, जिसे सैकड़ों-हजारों बार कहा और सुना जा चुका है। कुरुक्षेत्र में दो सेनाओं के बीच खड़े होकर भारी तनाव के समय भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को जो ज्ञान दिया, वह दुनिया का श्रेष्ठतम ज्ञान है। गीता का जन्म युद्ध के मैदान में दो सेनाओं के बीच हुआ। जीवन की श्रेष्ठतम बातें भारी तनाव और दबाव में ही प्रकाश में आती हैं। अगर आप दिमाग को शांत और मन को स्थिर रखने की कोशिश करें, तो सबसे बुरी परिस्थितियों में भी आप अपने लिए कुछ बहुत बेहतरीन निकाल पाएंगे, यह श्रीकृष्ण सिखाते हैं। गीता पढ़ने से पहले अगर इसी बात को समझ लिया जाए, तो हमारा गीता पढ़ना सफल हुआ मानो।

भगवान श्रीकृष्ण का जीवन ऐसी ही बातों से भरा पड़ा है, जरूरत है नजरिए की। उनका जीवन आपके लिए मिथक का एक हिस्सा मात्र भी हो सकता है, और आपका पूरा जीवन बदलकर रख देने वाला ज्ञान भी। आवश्यकता हमारी है, हम उनके जीवन से लेना क्या चाहते हैं। श्रीकृष्ण मात्र कथाओं में पढ़े या सुने जाने वाला पात्र नहीं हैं, वे चरित्र और व्यवहार में उतारे जाने वाले देवता हैं। श्रीकृष्ण से सीखें, कैसे जीवन को श्रेष्ठ बनाया जाए। भगवान श्रीकृष्ण के जीवन से संबंधित मुख्य दस बातें हैं, जो अगर व्यवहार में उतार लीं, तो सफलता निश्चित मिलेगी।

1. शुरू से अंत तक, जीवन संघर्ष ही है- कारागृह में जन्मे श्रीकृष्ण। पैदा होते ही रात में यमुना पार कर गोकुल ले जाया गया। तीसरे दिन पूतना मारने आ गई। यहां से शुरू हुआ संघर्ष देह त्यागने से पहले द्वारिका डुबोने तक रहा। श्रीकृष्ण का जीवन कहता है कि आप कोई भी हों, संसार में आए हैं तो संघर्ष हमेशा

रहेगा। मानव जीवन में आकर परमात्मा भी सांसारिक चुनौतियों से बच नहीं सकता। भगवान श्रीकृष्ण ने कभी किसी बात की शिकायत नहीं की। उन्होंने हर परिस्थिति को जिया और जीता। श्रीकृष्ण कहते हैं कि परिस्थितियों से भागो मत, उसके सामने डटकर खड़े हो जाओ; क्योंकि कर्म करना ही मानव जीवन का पहला कर्तव्य है। हम कर्मों से ही परेशानियों से जीत सकते हैं।



2. स्वस्थ शरीर से ही विजय है- भगवान श्रीकृष्ण का बचपन माखन-मिश्री खाते हुए बीता। आज भी माखन-मिश्री का भोग लगाते हैं हम; लेकिन ये संकेत कुछ और है। आहार अच्छा हो, शुद्ध हो, बल देने वाला हो। बचपन में शरीर को अच्छा आहार मिलेगा, तो ही इंसान युवा होकर वीर बनेगा। शरीर को स्वस्थ रखना है, तो बचपन से ध्यान देने की जरूरत है। ये परवरिश के दौर से गुजर रहे युवाओं के लिए बड़ा संदेश है, अपने बच्चों को ऐसा खाना दें, जो उनको बल दे। सिर्फ स्वाद के लिए ही ना खिलाएं। तभी वे बड़े होकर स्वयं को और समाज को सही दिशा में ले जा पाएंगे।

3. पढ़ाई किताबी ना हो, रचनात्मक हो- श्रीकृष्ण ने अपनी शिक्षा मध्य प्रदेश के उज्जैन में सांदीपनि ऋषि के आश्रम में रह कर पूरी की थी। कहा जाता है 64 दिन में उन्होंने 64 कलाओं का ज्ञान हासिल कर लिया था। वैदिक ज्ञान के अलावा उन्होंने सभी कलाएं सीखीं। शिक्षा ऐसी ही होनी चाहिए जो हमारे व्यक्तित्व का रचनात्मक विकास करे। संगीत, नृत्य, युद्ध सहित 64 कलाएं श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व का हिस्सा हैं। बच्चों में कोरा ज्ञान ना भरें। उनकी रचनात्मकता को नए आयाम मिलें, ऐसी

शिक्षा व्यवस्था हो।

4. रिश्तों से ही जीवन है, बिना रिश्तों के कुछ नहीं- श्रीकृष्ण ने जीवनभर कभी उन लोगों का साथ नहीं छोड़ा, जिनको मन से अपना माना। अर्जुन से वे युवावस्था में मिले, ऐसा महाभारत कहती है, लेकिन अर्जुन से उनका रिश्ता हमेशा मन का रहा। सुदामा हो या उद्धव। श्रीकृष्ण ने जिसे अपना मान लिया, उसका साथ जीवन भर दिया। रिश्तों के लिए श्रीकृष्ण ने कई लड़ाइयां लड़ीं और रिश्तों से ही कई लड़ाइयां जीतीं। उनका सीधा संदेश है सांसारिक इंसान की सबसे बड़ी धरोहर रिश्ते ही हैं। अगर किसी के पास रिश्तों की थाती नहीं है, तो वह इंसान संसार के लिए गैर जरूरी है। इसलिए, अपने रिश्तों को दिल से जीएं, दिमाग से नहीं।

5. नारी का सम्मान समाज के लिए जरूरी- राक्षस नरकासुर का आतंक था। करीब 16,100 महिलाओं को उसने अपने महल में कैद किया था। श्रीकृष्ण ने उसे मारा। सभी महिलाओं को मुक्त कराया; लेकिन सामाजिक कुरृतियां तब भी थीं। उन महिलाओं को अपनाने वाला कोई नहीं था। खुद उनके घरवालों ने उन्हें दूषित मानकर त्याग दिया। ऐसे में श्रीकृष्ण आगे आए। सभी 16,100 महिलाओं को अपनी पत्नी का दर्जा दिया। समाज में उन्हें सम्मान के साथ रहने के लिए स्थान दिलाया। श्रीकृष्ण ने हमेशा नारी को शक्ति बताया, उसके सम्मान के लिए तत्पर रहे। पूरी महाभारत नारी के सम्मान के लिए ही लड़ी गई। सो, आप कृष्ण भक्त हैं तो अपने आसपास की महिलाओं का पूरा सम्मान करें। श्रीकृष्ण की कृपा पाने का ये सरलतम मार्ग है।

6. आपके मतभेद अगली पीढ़ी के लिए बाधा ना बनें- कम ही लोग जानते हैं कि जिस दुर्योधन के खिलाफ श्रीकृष्ण ने आजीवन पांडवों का साथ दिया। उसकी मौत का कारण भी श्रीकृष्ण की कूटनीति बनी, वही दुर्योधन रिश्ते में श्रीकृष्ण का समथी भी था। श्रीकृष्ण के पुत्र सांब ने दुर्योधन की बेटी लक्ष्मणा का अपहरण करके उससे विवाह किया था। क्योंकि लक्ष्मणा, सांब से विवाह करना चाहती थी; लेकिन दुर्योधन खिलाफ था। सांब को कौरवों ने बंदी भी बनाया था। तब श्रीकृष्ण ने दुर्योधन को समझाया था कि हमारे मतभेद अपनी जगह हैं, लेकिन हमारे विचार हमारे बच्चों के भविष्य में बाधा नहीं बनने चाहिए। दो परिवारों के आपसी झगड़े में बच्चों के प्रेम की बलि ना चढ़ाई जाए। श्रीकृष्ण ने लक्ष्मणा को पूरे सम्मान के साथ अपने यहां रखा। दुर्योधन से उनका मतभेद हमेशा रहा, लेकिन उन्होंने उसका प्रभाव कभी लक्ष्मणा और सांब की गृहस्थी पर नहीं पड़ने दिया।

7. शांति का मार्ग ही विकास का रास्ता है- कृष्ण ने महाभारत युद्ध के पहले शांति से समझौता करने के लिए पांडवों

और कौरवों के बीच मध्यस्थता की। हालांकि दोनों ही पक्ष युद्ध लड़ने के लिए आतुर थे, लेकिन श्रीकृष्ण ने हमेशा चाहा कि कैसे भी युद्ध टल जाए। झगड़ों से कभी समस्याओं का समाधान नहीं होता है। शांति के मार्ग पर चलकर ही हम समाज का रचनात्मक विकास कर सकते हैं। श्रीकृष्ण ने समाज की शांति से मन की शांति तक, दुनिया को ये समझाया कि कोई भी परेशानी तब तक मिट नहीं सकती, जब तक वहां शांति ना हो। फिर चाहे वह समाज हो या हमारा खुद का मन। शांति से ही सुख मिल सकता है, साधनों से नहीं।

8. हमेशा दूरगामी परिणाम सोचें- महाभारत में जुए की घटना के बाद पांडवों को वनवास हो गया। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को समझाया कि ये समय भविष्य के लिए तैयारी करने का है। महादेव शिव, देवराज इंद्र और दुर्गा की तपस्या करने को कहा। श्रीकृष्ण जानते थे कि दुर्योधन को कितना भी समझाया जाए, वह पांडवों को कभी उनका राज्य नहीं लौटाएगा। तब शक्ति और सामर्थ्य की जरूरत होगी। कर्ण के कुंडल कवच पांडवों की जीत में आड़े आएंगे ये भी वे जानते थे। उन्होंने हर चीज पर बहुत दूरगामी सोच रखी। कोई भी फैसला तात्कालिक आवेश में नहीं लिया। हर चीज के लिए आने वाली पीढ़ियों तक का सोचा। यही सोच समाज का निर्माण करती है।

9. हर परिस्थिति में मन शांत और दिमाग स्थिर रहे- पांडवों के राजसूय यज्ञ में शिशुपाल श्रीकृष्ण को अपशब्द कहता रहा। छोटा भाई था, लेकिन मर्यादाएं तोड़ दीं। पूरी सभा चकित थी, कुछ क्रोधित भी थे लेकिन श्रीकृष्ण शांत थे, मुस्कुरा रहे थे। शांति दूत बनकर गए तो दुर्योधन ने अपमान किया। श्रीकृष्ण शांत रहे। अगर हमारा दिमाग स्थिर है, मन शांत है तभी हम कोई सही निर्णय ले पाएंगे। आवेश में हमेशा हादसे होते हैं, ये श्रीकृष्ण सिखाते हैं। विपरीत परिस्थितियों में भी कभी विचलित नहीं होने का गुण श्रीकृष्ण से बेहतर कोई नहीं जानता।

10. लीडर बनें, श्रेय लेने की होड़ से बचें- कृष्ण ने दुनियाभर के राजाओं को जीता था। जहां ऐसे राजाओं का राज था, जो भ्रष्ट थे, जैसे जरासंध। लेकिन कभी किसी राजा का सिंहासन नहीं छीना। श्रीकृष्ण के पूरे जीवन में कभी ऐसा नहीं हुआ कि उन्होंने किसी राजा को मारकर उसका शासन खुद लिया हो। जरासंध को मारकर उसके बेटे को राजा बनाया, जो चरित्र का अच्छा था। सभी जगह ऐसे लोगों को बैठाया, जो धर्म को जानते थे। कभी राजा नहीं बने, हमेशा राजा बनाने वाले की भूमिका में रहे। महाभारत युद्ध में भी खुद हथियार नहीं उठाया। पूरा युद्ध कूटनीति से लड़ा, पांडवों को सलाह देते रहे, लेकिन जीतने का श्रेय भीम और अर्जुन को दिया। ■

सुरक्षा की अवधारणा का सनातन उदघोष है रक्षाबंधन

रक्षाबंधन का पर्व न केवल एक पारिवारिक त्यौहार है, बल्कि यह एक गूढ़ आध्यात्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रतीक भी है। यह त्यौहार सुरक्षा, परस्पर कर्तव्य और प्रेम की भावना के सनातन उदघोष का उत्सव है। श्रावण मास की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला यह पर्व भारतवर्ष की विविधता में एकता, आत्मिक समर्पण और

थे, तब इंद्राणी ने एक मंत्रसिद्ध रक्षासूत्र तैयार कर इंद्र की दाहिनी कलाई पर बाँधा। उसी दिन श्रावण पूर्णिमा थी। उस सूत्र की आध्यात्मिक शक्ति से इंद्र को विजय प्राप्त हुई।

इस त्यौहार का संबंध द्रौपदी और श्रीकृष्ण से भी जुड़ा हुआ है। महाभारत में वर्णन है कि जब श्रीकृष्ण ने शिशुपाल का वध किया, तो उनकी ऊँगली कट गई। द्रौपदी ने तत्काल



रक्षा बंधन, 9 अगस्त पर विशेष

पवित्र बंधन की अनूठी अभिव्यक्ति है। **“रक्षाबंधन”** शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है- ‘रक्षा’ अर्थात् सुरक्षा और ‘बंधन’ अर्थात् बंधन या संबंध। शास्त्रों में इसे ‘रक्षासूत्र-बंधन’ कहा गया है। यह रक्षा सूत्र केवल भौतिक सुरक्षा नहीं, बल्कि आत्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सुरक्षा का प्रतीक है।

पौराणिक दृष्टांतों में यह त्यौहार राजा बलि और वामन अवतार की कथा से जुड़ी है। श्रीमद्भागवत महापुराण में वर्णन आता है कि भगवान विष्णु ने वामन रूप धारण कर दैत्यराज बलि से तीन पग भूमि मांगी। वामन ने सारा त्रैलोक्य नाप लिया। बलि ने जब स्वेच्छा से अपना सिर आगे बढ़ाया, तब लक्ष्मी जी ने ब्राह्मण रूप में जाकर बलि को राखी बाँधी और उसे भाई स्वीकार कर अपने पति विष्णु को वापस विष्णुलोक बुलाया। इस प्रकार इस रक्षा सूत्र ने बंधन को त्याग और सम्मान से जोड़ दिया है। इंद्राणी और इंद्र का प्रसंग भी इस त्यौहार से जुड़ा हुआ है। भविष्योत्तर पुराण के अनुसार, जब इंद्र असुरों से युद्ध में पराजय की स्थिति में

अपनी साड़ी का टुकड़ा फाड़कर कृष्ण की उंगली पर बाँध दिया। यह बंधन भावनात्मक था, परंतु उसका प्रभाव इतना गहरा था कि श्रीकृष्ण ने चीरहरण के समय उसी बंधन का ऋण चुकाया।

इस त्यौहार का संबंध ज्योतिषीय पक्ष से भी है और इसमें भद्रा रहित समय का विशेष महत्व है। श्रावण पूर्णिमा को मनाया जाने वाला यह पर्व ग्रह-नक्षत्रों की अनुकूलता में संपन्न किया जाता है। इस दिन चन्द्रमा श्रवण नक्षत्र में स्थित होता है जो कि भगवान विष्णु से संबंधित है। भद्रा काल को रक्षाबंधन में अशुभ माना गया है। भद्रा काल में रक्षा सूत्र बांधना वर्जित है; क्योंकि यह काल विभाजन देवी भद्रा की अशुभता से जुड़ा है। पंचांग के अनुसार, रक्षा सूत्र भद्रा रहित मुहूर्त में ही बांधना चाहिए ताकि रक्षा का कार्य मंगलकारी और फलदायक हो। रक्षाबंधन का त्यौहार केवल भाई-बहन के संबंधों का पर्व नहीं, यह समाज के प्रत्येक घटक के बीच परस्पर प्रेम, विश्वास और दायित्व का संकेत देता है। ब्राह्मण

अपने यजमानों को रक्षा सूत्र बाँधते हैं, जिससे आत्मिक और धार्मिक बंधन का निर्माण होता है। यह व्यक्ति विशेष को धर्म, कर्तव्य और संकल्प के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। यह त्यौहार एक ओर बहन के द्वारा भाई की लंबी उम्र की कामना और दूसरी ओर भाई के द्वारा बहन की रक्षा का संकल्प का प्रतीक पर्व है।

रक्षाबंधन का मूल उद्देश्य है: **‘सर्वे भवन्तु सुखिनः’** अर्थात् सभी के कल्याण की भावना। यह पर्व हमें यह भी सिखाता है कि रक्षा का अर्थ केवल बाह्य आक्रमणों से सुरक्षा नहीं, बल्कि नारी सम्मान, समाज की रक्षा, संस्कृति की रक्षा और आत्मा की रक्षा भी है। हमारे देश में रक्षाबंधन त्यौहार मनाने की विविध परंपराएँ हैं। हमारे देश के विभिन्न क्षेत्रों में यह पर्व विभिन्न नामों और स्वरूपों में मनाया जाता है। महाराष्ट्र में इसे नारळी पूर्णिमा कहा जाता है, जहाँ कोली समाज समुद्र को नारियल अर्पण कर समुद्र देवता से सुरक्षा की कामना करता है। उत्तर भारत में बहनें भाइयों को राखी बाँधती हैं और मिठाई खिलाकर उनकी लंबी उम्र की कामना करती हैं। राजस्थान में रक्षाबंधन को ‘लूंबा राखी’ के रूप में भी जाना जाता है जहाँ भाभियों

को भी राखी बाँधी जाती है। दक्षिण भारत में इसे ‘रक्षा पोर्णिमा’ कहा जाता है और यहाँ यह मुख्यतः ब्राह्मणों द्वारा यजमानों को राखी बाँधने की परंपरा से जुड़ा होता है। यह रक्षाबंधन का पर्व एक प्रतीक है- रक्षा, समर्पण, प्रेम और कर्तव्य का।

यह त्यौहार हमें यह स्मरण कराता है कि हमारी संस्कृति में बंधन भी मुक्ति का साधन बन सकता है जब वह त्याग, कर्तव्य और समर्पण से जुड़ा हो। स्वजनों की सुरक्षा की यह सनातन अवधारणा हमें प्रेरणा देती है कि जीवन में संबंधों को निभाना भी एक आध्यात्मिक यात्रा है। ब्राह्मण जन रक्षा सूत्र बांधते समय यह मंत्र बोलते हैं-

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।

तेन त्वामपि बध्नामि रक्षे मा चल मा चल॥

यानी जिस रक्षासूत्र से महान पराक्रमी दानवों के राजा बलि को बाँधा गया था, उसी से मैं तुम्हें बाँधता हूँ। यह रक्षासूत्र तुम्हारी सदा रक्षा करे और तुम अडिग बने रहो। जाहिर है, यह पर्व एक अवसर है आत्मिक रक्षा का, सामाजिक सौहार्द्र का और सनातन संस्कृति के गौरव को पुनः स्मरण करने का। ■

आत्मोन्नति का उपाय है दूसरों की मदद

भगवद्गीता में भगवान कृष्ण कहते हैं, ‘हे पार्थ! जो आध्यात्मिक मार्ग पर चलता है, उसका न तो इस संसार में और न ही आने वाले संसार में विनाश होता है। जो ईश्वर प्राप्ति के लिए प्रयास करता है, वह कभी भी बुरे के सामने हारता नहीं।’ स्वयं के सुधार पर काम करना जीवन में आगे बढ़ने का एक अच्छा तरीका है। न केवल जीवन के सभी क्षेत्रों में अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, बल्कि आध्यात्मिक मार्ग के लिए भी स्व-विकास आवश्यक है। प्रश्न है कि स्व-विकास के लिए हमें कौन-से कदम उठाने होंगे? सीधा सरल उत्तर है कि अच्छे काम करने चाहिए। जब आप अपनी ऊर्जा लगाते हैं, तो आपके द्वारा किये जाने वाले कर्म पर उसका बड़ा प्रभाव पड़ता है। इसलिए ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण पहलू हैं, जिन पर ध्यान देना चाहिए।

पहला, शारीरिक स्वास्थ्य पर ध्यान दें। शारीरिक परेशानी, आलस्य, मानसिक अस्थिरता कुछ ऐसे

कारक हैं, जो हमारे स्व-विकास के रास्ते में बाधा डालते हैं। इसलिए सफलता प्राप्त करने के लिए शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना बहुत जरूरी है। योग आसन, प्राणायाम और क्रिया शरीर को मजबूत बनाने में मदद करते हैं। ये बायो एनर्जी को कुशल स्तर पर बनाए रखने पर भी काम करते हैं। इसके अलावा, योग तकनीक दिमाग को व्याकुलता से बचने के लिए प्रशिक्षित करती है। दूसरा, विशेषज्ञता के विकास पर ध्यान दें। काम को जिम्मेदारी और समर्पण की भावना के करें। केवल वही व्यक्ति जो विचलित नहीं होता है, अपनी गतिविधि पर पूरी तरह से ध्यान केन्द्रित कर पाता है। दिमाग को अंतिम लक्ष्य के बजाय वर्तमान कार्य पर ध्यान केन्द्रित करने के लिए प्रशिक्षित करें। तीसरा, निःस्वार्थ भाव रखें। हमारा जीवन मदद देने के लिए समर्पित होना चाहिए। यदि आध्यात्मिक स्व-विकास प्राप्त करना चाहते हैं, तो सुनिश्चित करें कि आपके कार्य दूसरों के उत्थान में मदद करें। ■

साधक से सिद्ध बनने का मार्ग

साधारण से दिखने वाले मनुष्य में इतनी शक्तियां छिपी हुई हैं कि वह हजारों जन्मों के कर्म-बन्धनों और पाप-तापों को काटकर अपने अजन्मा, अमर आत्मा में प्रतिष्ठित हो सकता है। मनुष्य तो क्या, यक्ष, किन्नर, गंधर्व एवं देवता भी उसका दर्शन पाकर तथा यशोगान करके अपना भाग्य बनाने लगे- ऐसा खजाना मनुष्य शरीर के भीतर छुपा हुआ है। महान होने की इतनी संभावनाओं के रहते हुए भी मानव

बहिर्मुख होने के कारण पशु की नाई जीवन जीता है, व्यर्थ के तुच्छ भोग-विलास में ही अपना अमूल्य जीवन बिता देता है और अंत में अतृप्ति के कारण निराश होकर मर जाता है। व्यर्थ की चर्चा करने, बोलने, विचारने तथा मनोरथ गढ़ने में ही भोला मनुष्य अपनी आन्तरिक शक्तियों का हास कर डालता है। किन्तु साधक का जीवन संसारियों के जीवन से भिन्न होता है। संसारी लोगों की बातों में लोभ-मोह-अहंकार का

पुट होता है, लेकिन साधक के चित्त में निर्मलता, निर्मोहता, निर्भीकता एवं निरहंकारिता की सुवास होती है। संसारी मनुष्य नश्वर सुख-भोग की वस्तुओं का संग्रह करके इन्द्रियजन्य सुखों को भोगने को उत्सुक होता है; जबकि साधक संसार के नश्वर सुख-भोग की वस्तुओं की अपेक्षा न करके अंतर्मुख होकर, आत्मानंद को पाने के महान रास्ते पर चलता है। संसारी मनुष्य किसी की निंदा-स्तुति करके तो किसी में राग-द्वेष करके अपने चित्त को मलिनता की खाई में डालता है, जबकि साधक निंदा-स्तुति, मान-अपमान और राग-द्वेष को चित्त की वृत्तियों का खिलवाड़ समझ कर अपने भीतर ही आत्मा में गोता मारने का प्रयास करता है। अपने स्वरूप को स्नेह करते-करते साधक निजानंद-स्वभाव में तृप्त होने को उत्सुक होता है, जबकि निगुरा मनुष्य निजानंद-स्वभाव से बेखबर होकर विकारों के जाल में फंसा रहता है।

इसीलिए उन्नति चाहने वाले संयमी साधक को विकारी जीवन बिताने वाले संसारी लोगों से मिलने में घाटा-ही-घाटा

है। जबकि परमात्म प्राप्त महापुरुषों का सानिध्य उसके जीवन में उत्साह और आनंद भरने में बड़ा सहायक सिद्ध होता है। सत्यस्वरूप परमात्मा में रमण करने वाले उन आत्मारामी सत्पुरुषों के श्रीचरणों में जाकर साधक आत्मधन सिद्ध होता है। लेकिन जब वह असावधानी से संसारियों एवं विकारियों के बीच में पड़ जाता है, उनके संपर्क में आने लगता है, तो वह अपनी ध्यान शक्ति का संचय करते हुए अपनी आत्मा में



प्रतिष्ठित होने तक उसे सावधानी से संभालकर रखे तो वह साधक देर-सबेर एक दिन सिद्ध हो ही जाता है। साधक के लिए एकान्तवास, धारणा-ध्यान का अभ्यास, ईश्वर प्राप्ति, शास्त्र विचार एवं महापुरुषों की संगति-ये सभी अनिवार्य शर्तें हैं। एकान्त में विचरण करना, कुछ दिनों के लिए एक कमरे में अकेले ही मौन रहकर धारणा-ध्यान का अभ्यास करना साधना में सफलता पाने के लिए परम लाभकारी है। व्यर्थ का

बोलना, सुनना एवं देखना साधक पसंद नहीं करता; क्योंकि व्यर्थ का बोलने एवं जोर से बोलने से प्राणशक्ति, मनःशक्ति तथा एकाग्रता की शक्ति क्षीण होती है। व्यर्थ का देखने से चित्त में कुसंस्कार घुस जाते हैं और व्यर्थ का सुनने से चित्त मलिन हो जाता है। अतः उन्नति के साधक को चाहिए कि वह व्यर्थ का देख-सुनकर अपनी शक्ति को क्षीण होने से बचाये।

साधक उचित आहार-विहार से अपना सत्वगुण संजोये रखता है। सत्वगुण की रक्षा करना उसका परम कर्तव्य बन जाता है। उसे फिर ज्ञान बढ़ाने के लिए किसी शास्त्र की आवश्यकता नहीं पड़ती, वरना सत्वगुण बढ़ते ही साधक में ज्ञान अपने-आप प्रगट होने लगता है। सत्वात्संजायते ज्ञानम्। जैसे लोभी धन को संभालता है, अहंकारी कुर्सी को संभालता है, मोही कुटुम्बियों को संभालता है, ठीक ऐसे ही साधक अपने चित्त को चंचल, क्षीण एवं उग्र होने से बचाता है। जिन कारणों से चित्त में क्षोभ पैदा होता है, जिन कारणों से चिन्ता और भय बढ़ते हैं, ऐसे क्रिया-कलालों से साधक सदैव सावधान रहता

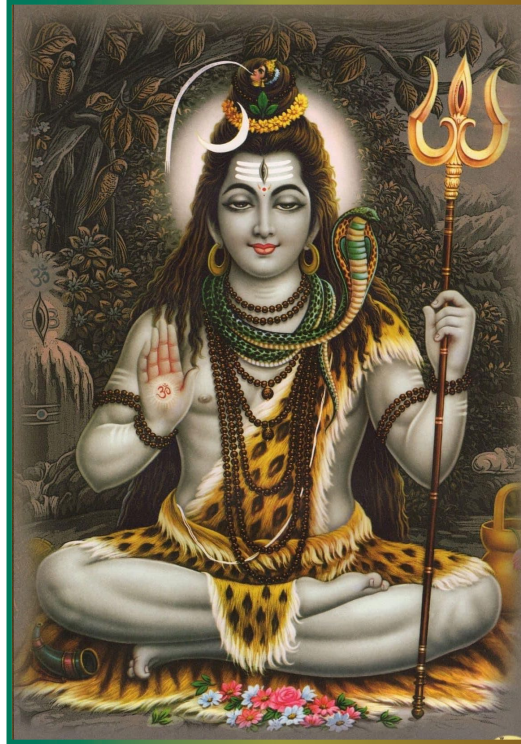
है। अगर इस प्रकार की परिस्थिति बलात आ भी जाये, तो साधक शांति से जप-ध्यान, सत्संग और शास्त्राध्ययन आदि का आश्रय लेकर विक्षेप उत्पन्न करने वाले उन क्रिया-कलापों एवं विचारों से अपने को मुक्त कर लेता है। साधक को चाहिए कि वह अपने आपका मित्र बन जाये। अगर साधक परमात्म प्राप्ति के लिए सजग रहकर आध्यात्मिक यात्रा करता रहता है, तो वह अपने-आपका मित्र है और अगर वह अनात्म पदार्थों में, संसार के क्षण भंगुर भोगों में ही अपना समय बर्बाद कर देता है, तो वह अपने-आपका शत्रु हो जाता है। उच्च कोटि का साधक जानता है कि-

**चातक मीन पतंग जब,
पिया बिन ना रह पाया।
साध्य को पाये बिना,
साधक क्यों रह जाय?**

बुद्धिमान साधक समझता है कि उसका लक्ष्य आत्मज्ञान पाना है और इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए जीवन में थोड़ी-बहुत दृढ़ता जरूरी है। जो लोग दूसरों को खुश करने में, मित्रों को रिझाने में या वाहवाही में अपने लक्ष्य को ठोकर मार देते हैं, अपने परम कर्तव्य को भूल जाते हैं, वे फिर कहीं के नहीं रहते। मित्र या कुटुम्बीजन हमारा जितना समय खराब करते हैं, उतना शत्रु भी नहीं करते। अतः बुद्धिमान साधक इस विषय में बड़ा सावधान रहता है ताकि उसका अमूल्य समय कहीं व्यर्थ की बातों में ही नष्ट न हो जाये। इसलिए वह कभी-कभी मौनव्रत का अवलंबन ले लेता है जिससे उसकी जीवन शक्ति बिखरने से बच जाये। साधक मौन एवं एकांत-सेवन का जितना अधिक अवलंबन लेता है, उतनी ही उसकी दृढ़ता में बढ़ोत्तरी होती जाती है। हे साधक! तू अपनी दृढ़ता बढ़ा, धारणा-शक्ति बढ़ा। तुझमें ईश्वर का असीम बल छुपा है। परमात्मा तुझमें ज्ञानरूप प्रकट होने की प्रतीक्षा कर रहा है। तेरे भीतर विश्वनियंता अपने पूर्ण बल, तेज, ओज, आनंद और प्रेम सहित प्रकट होना चाहता है। अतः हे साधक! तू सावधान रहना। कहीं संसार के कंटीले मार्गों में उलझ न जाना। जीवनदाता से मुलाकात किये बिना ही कहीं जीवन की शाम न ढल जाये। अतः सावधान रहना। भैया! जब संसार स्वप्न जैसा लगे, तब आंतरिक सुख की शुरुआत

होती है। जब संसार मिथ्या भासित होने लगे, उसका चिंतन न हो, तब अंतःकरण में शांति व आराम प्रगट होने लगते हैं। जब चित्त अपने चैतन्यस्वरूप परम स्वभाव में तल्लीन होने लगे, तब आंतरिक आनंद प्रगट होने लगता है। सारी मुसीबतें संसार को सत्य मानने एवं बहिर्मुख होने से ही आती हैं। अगर साधक अन्तर्मुख हो जाये तो उसे संसार स्वप्नवत लगने लगे। अतः साधक को सदैव अन्तर्मुख होने का अभ्यास करना चाहिए। ऐसा करने से उसकी सारी व्याकुलताएं, दुःख, शोक एवं चिन्ताएं अपने आप गायब हो जायेंगी।

जो समय हमें परमात्मा को जानने में लगाना चाहिए, ज्ञान



पाने में लगाना चाहिए, अंतर्मुख होने में लगाना चाहिए, वही समय हम संसार की तुच्छ वस्तुओं, भोगों एवं बहिर्मुखता में लगा देते हैं, इसीलिए ईश्वर प्राप्ति में विफल हो जाते हैं। संसार के प्रति आकर्षण का कारण है, ईश्वर में श्रद्धा का अभाव एवं अंतर्मुख होने में लापरवाही। अगर साधक अंतर्मुख होता जाये तो उसका आत्मबल उत्तरोत्तर बढ़ता जाये और एक दिन उसके सारे दुःखों का अंत हो जाये। चाहे कैसा भी अपराध हो, बहुत बड़ा पाप हो, महापाप हो, यदि आत्मज्ञान की कुंजी मिल जाये, अंतर्मुख होने की कला आ जाये तो पाप में इतनी ताकत ही नहीं

कि उसके आगे टिक सके। मौन, जप, उचित आहार-विहार, एकांत-सेवन एवं आत्मविचार अन्तर्मुखता लाने में अत्यंत सहायक सद्धि होते हैं। जिन्होंने भी लोक संपर्क से दूर रहकर अज्ञात स्थान में एकांत सेवन किया तथा अल्पाहार का आश्रय लिया, एकान्त में रहकर ध्यान और योग के बल से अपनी जीवन शक्ति को विकसित करके जीवनदाता को, नित्यज्ञान, नित्यप्रेम और नित्य आत्मसुख को पाने का प्रयत्न किया, वे ही महापुरुष हो गये। लेकिन जिन्होंने लोकसंपर्क का सतत सेवन किया और लोकेश्वर के लिए अंतर्मुख होना स्वीकार नहीं किया, उनके पास केवल कोरी बातें ही रह गयीं। जिन्होंने भी मन की वृत्तियों को बहिर्मुख करके उन्हें कल्पनाओं की धारा में बहाया, उन्होंने वास्तव में अपनी जीवन शक्ति को क्षीण करने में ही समय गंवाया, अतः उनके जीवन में अंधेरा ही छाया रहा। ■

धैर्य और त्याग का अद्भुत संगम हैं गणाधिपति श्री गणेश जी

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,
लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाथ श्रुतियज्ञविभूषिताय,
गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।

सभी को वर देने वाले, देवताओं के प्रिय और सभी कलाओं से परिपूर्ण चरित्र, जिन्हें देखकर अनुशासन, प्रण, वचन और कर्म की एकरूपता सामने आती हो। जो साहस सिखाते हों, जो निर्भय होने का मंत्र दें और जो सभी के मंगल का आशीर्वाद दें, वह हैं पार्वती पुत्र गणपति गणेश। श्री गणेश जी का चरित्र किसी को भी तकलीफ नहीं देता है। उनका हर एक को समेटने वाला चरित्र है, आखिर वे उस पिता की संतान हैं, जिन्होंने संसार के कल्याण के लिए स्वयं विष को ग्रहण किया और सबके लिए अमृत बांट दिया। वह उन मां पार्वती के पुत्र हैं, जिनके तप और धैर्य का उदाहरण इस संसार में कम ही देखने-सुनने को मिलता है। एक तरफ शिव जी का हठ था, तो दूसरी ओर मां पार्वती के धैर्य की शिक्षा।

बालक गणेश में दोनों तत्व झलकते हैं। गणेश जी के चरित्र में एक और जो सबसे बड़ा दर्शन मिलता है, वह है अहिंसा और क्षमा का दर्शन।

माता पार्वती के कहने पर वह दरवाजे पर खड़े हैं, किसी को भी अंदर आने का आदेश नहीं है। जब शिव जी अंदर जाना चाहते हैं, तब माता की आज्ञा का पालन करते हुए उन्हें अंदर प्रवेश करने से रोक देते हैं। इस रोकने में ही गणेश जी का दर्शन छिपा है। हिंसा नहीं है, बस एक विरोध है कि प्राणों की

आहुति दे देंगे, पर आपको अंदर नहीं जाने देंगे। देखिए, शिव के क्रोध से कौन नहीं परिचित है, पर साहस और अहिंसा के इस अमिट दर्शन को यहीं पर समझिए। अंततः उनका सिर शिव के क्रोध की भेंट चढ़ जाता है, पर वे विचलित नहीं होते हैं। जब मां पार्वती इस वीभत्स घटना को देखती हैं, तो तड़प उठती हैं। शिव अपने क्रोध से अलग गणेश के त्याग को देखते हैं और

तुरन्त एक जीव का सिर उनके सिर के स्थान पर लगाते हैं। वह जीव एक गज होता है, इस तरह उनका गजानन रूप सामने आता है। सही रास्ते के लिए त्याग ही सर्वोत्तम उपाय है।

गणेश चतुर्थी घर-घर गणपति के आने का उत्सव है। यह हमारी संस्कृति का हिस्सा है। माता के लिए पिता के सामने खड़े हैं, पर पूरी मर्यादा और अनुशासन के साथ। कहीं किसी का अपमान नहीं, कहीं किसी से कोई खीझ नहीं, कहीं किसी पर कोई प्रहार नहीं। बस मां की आज्ञा के पालन के लिए सर्वस्व त्यागने को आतुर एक बालक जो इस पूरे संसार का शिक्षक है। हमें गणेश जी के चरित्र से सीखना चाहिए,

खासकर धैर्य का अध्याय। धैर्य और त्याग, जिसमें घर कर गया, वह संसार के लिए सबसे उपयोगी होगा। गणेश जी इसीलिए मंगलकारी हैं, क्योंकि उनमें विद्या है, साहस है, धैर्य है, त्याग है और साथ ही क्षमा करने का गुण है। यही कारण है कि गणेश जी संपूर्ण विश्व के लिए शांति का एक अद्भुत संगम हैं। श्री गणेश चतुर्थी के सुअवसर पर हम श्री गणेश जी के श्री चरणों में नमन करते हुए उनसे ज्ञान, बुद्धि, शक्ति और कर्तव्य के प्रति समर्पण भाव की कामना करते हैं। ■



महाभारत का युद्ध समाप्त हो चुका था। धर्मराज युधिष्ठिर ने तीर्थ यात्रा करने का निश्चय किया। साथ में चारों भाई अर्जुन, भीम, से कमंडल का कड़वापन निकल सकता है?’ अपनी स्वयं की पहली सुलझाते श्रीकृष्ण कहने लगे, ‘यदि ऐसा है तो तीर्थ-स्नान का बाह्योपचार मात्र करने से अन्तःकरण

नकुल, सहदेव समेत द्रौपदी भी थीं। तीर्थ यात्रा के लिए प्रस्थान करने

तीर्थ यात्रा का अभिप्राय

का परिष्कार, धुलाई-मार्जन कैसे हो सकता है?’ अब धर्मराज

से पूर्व भगवान श्रीकृष्ण के पास गए और उनसे साथ चलने का आग्रह किया। श्रीकृष्ण ने अपनी विवशता जताते हुए तीर्थ यात्रा में साथ न जा सकने की बात कही। सुखद यात्रा की कामना करते हुए उन्होंने एक कमंडल युधिष्ठिर को सौंपते हुए कहा, ‘बड़े भैया! जहाँ-जहाँ तीर्थ-स्थानों में नदियों और सरोवरों में स्नान करने

भलीभांति समझ चुके थे कि मन की पवित्रता के लिए अंतर्मुखी होकर अपने आत्म-साधना करना ही सही तीर्थ यात्रा है।

मन मंदिर तन भेष कलंदर, घट ही तीर्थ नावां।

एक शब्द मेरे प्राण बसत है, बहुरि जन्म नहीं आवां।।

का आपको अवसर मिले, वहाँ-वहाँ इस कमंडल को भी उनमें अवश्य ही स्नान करा लीजिएगा।’ युधिष्ठिर कमंडल लेकर सपरिवार तीर्थ यात्रा को चल पड़े। काफी दिनों के बाद युधिष्ठिर सपरिवार वापस लौटे। उन्होंने श्रीकृष्ण को उनका कमंडल देते हुए कहा, ‘आपकी आज्ञा के अनुसार जहाँ-जहाँ मैंने स्नान किया, वहाँ-वहाँ इसे भी पानी में डुबाया है।’ यही तो मैं चाहता था, इतना कहकर श्रीकृष्ण ने उस कमंडल को जमीन पर जोर से पटक दिया। उसके टुकड़े-टुकड़े हो गए। प्रसाद रूप में एक-एक टुकड़ा वहाँ उपस्थित सभी लोगों में वितरित कर दिया। जिसने भी यह प्रसाद चखा, उसका मुंह खराब हो गया। लोगों को थूकने और मुंह बनाते देखकर श्रीकृष्ण ने धर्मराज से पूछा, ‘यह कमंडल इतने तीर्थों में घूमकर आ रहा है और अनेक स्थानों पर इसने स्नान भी किया है, फिर भी इसका कड़वापन दूर क्यों नहीं हुआ?’

युधिष्ठिर आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहने लगे, ‘आप भी कैसी अजीब बात करते हैं श्रीकृष्ण, कहीं धोने मात्र

जसुमति मन अभिलाष करै

जसुमति मन अभिलाष करै।

कब मेरो लाल घटुरुवनि रेंगै, कब धरनी पग द्वैक धरै।।

जसुमति मन अभिलाष करै।। टेक।।

कब द्वै दांत दूध के देखौं, कब तोतरैं मुख बचन झरै।

कब नंदहिं बाबा कहि बोलै, कब जननी कहि मोहिं ररै।।

जसुमति मन अभिलाष करै।। 1।।

कब मेरौ अंचरा गहि मोहन, जोड़-सोड़ कहि मोसौं झगरै।

कब धौं तनक-तनक कछु खैहै, अपने कर सौं मुखहिं भरै।।

जसुमति मन अभिलाष करै।। 2।।

कब हंसि बात कहैगौ मौसौं, जा छबि तैं दुख दूर हरै।

स्याम अकेले आंगन छांड़े, आप गई कछु काज घरै।।

जसुमति मन अभिलाष करै।। 3।।

इहिं अंतर अंधवाह उठ्यौ इक, गरजत गगन सहित घहरै।

सूरदास ब्रज-लोग सुनत धुनि, जो जहं-तहं सब अतिहिं डरै।।

जसुमति मन अभिलाष करै।। 4।।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सात दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर संपन्न तन, मन और आत्मा की एकता के लिए योग अभ्यास जरूरी

श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली। “करो योग, रहो निरोग” की उक्ति के साथ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के सुअवसर पर श्री हंसलोक आश्रम, भाटी, नई दिल्ली में 15 जून से 21 जून, 2025 तक सात

समझाते हुए उनका प्रशिक्षण दिया। मुख्य रूप से कमर दर्द, घुटनों के दर्द, सर्वाङ्कल दर्द, साइटिका, एड़ी और पंजों के दर्द, गैस, कब्ज आदि के बारे में विस्तार से समझाया तथा उनके निवारण हेतु संबंधित आसनों का

साथ किया गया। संस्था के महात्मा/बाईगण तथा कार्यकर्ताओं ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर शिविर का शुभारंभ किया। इस शिविर में महात्मा कृपानंद जी, महात्मा ज्ञानप्रभानंद जी, महात्मा ज्ञानप्रकाशानंद जी, महात्मा



अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सात दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर में योगाचार्य श्री कृष्णकन्हैया राजपूत एवं सुश्री रूबी शुक्ला के मार्गदर्शन में योग आसनों का अभ्यास करते महात्मा/बाईगण एवं आश्रम के सेवकगण

दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें आश्रम के साधकों के साथ-साथ आसपास क्षेत्र के लगभग 300 योग साधक और साधिकाओं ने उत्साह पूर्वक भाग लेकर योगासनों, प्राणायाम, बंध और मुद्राओं का प्रशिक्षण प्राप्त किया। योगाचार्य श्री कृष्ण कन्हैया राजपूत और कुमारी रूबी शुक्ला ने बड़ी ही सरल भाषा में योगासनों के महत्व को

अभ्यास कराया। कटि आसन, तिर्यक आसन, सेतुबंध आसन, भुजंगासन, अर्द्धचक्रासन, वज्रासन, शलभासन, शशकासन, मयूरासन, सेतुबंध आसन, जानु शिरासन, शवासन, ताड़ासन, अनुलोम-विलोम, कपालभाति, शीतली और भस्त्रिका प्राणायाम का अभ्यास कराया गया।

योग प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ दीप-प्रज्ज्वलन और शांतिपाठ के

हरिप्रियाबाई जी तथा महात्मा दीक्षाबाई जी, हंसज्योति के प्रबंध संचालक श्री मानस स्वाई, राकेश सिंह आदि ने नियमित रूप से शिविर में भाग लिया। आश्रम परिसर में अवस्थित हाल में सुंदर मंच बनाकर योग प्रशिक्षण शिविर का बैनर लगाया गया था। योग साधकों को आसनों के लिए सुविधाजनक गद्दों की व्यवस्था की गयी थी। सभी साधकों में समयबद्धता, अनुशासन और लयबद्धता

देखने को मिली। इस प्रशिक्षण शिविर में सभी ने बहुत ही उत्साह और आनंद के साथ भाग लिया, सभी ने इस

को स्वस्थ बनाये रखने में सहूलियत रहे तथा योग आसन करने की जागृति और प्रेरणा निरंतर बनी रह सके। प्रशिक्षण

शिविर में भाग लेने आए साधकों के लिए प्रतिदिन अल्पाहार और जलपान की सुंदर व्यवस्था की गयी थी। ■



अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सात दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर में अर्द्ध-चक्रासन का अभ्यास करते महात्मा/बाईगण एवं आश्रम के सेवकगण

प्रकार योग प्रशिक्षण शिविर की आवश्यकता पर जोर दिया और अनुरोध किया कि इस तरह के शिविर समय-समय पर अवश्य लगाये जायें ताकि सभी को अपने तन और मन



अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर सात दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर में योगाचार्या सुश्री रूबी शुक्ला के मार्गदर्शन में वज्रासन का अभ्यास करते महात्मा/बाईगण एवं आश्रम के सेवकगण

-: पत्रिका संबंधी सूचना :-

सभी आदरणीय महात्मा/बाईगण, प्रचारकों, श्री हंसलोक सेवकों, कार्यकर्ताओं एवं प्रबुद्ध पाठकों से निवेदन है कि अध्यात्म-ज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु आप सब अपने गाँव/क्षेत्र में **“हंसलोक संदेश”** मासिक पत्रिका को अधिक से अधिक प्रेमी-भक्तों एवं अध्यात्मज्ञान पिपासुओं तक पहुँचायें। पत्रिका अध्यात्म ज्ञान प्रचार का स्थाई माध्यम है। पत्रिका के माध्यम से आपको हर माह परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं डॉ. माताश्री मंगला जी के देशभर में स्थान-स्थान पर आयोजित जनकल्याण समारोहों में दिए गए प्रवचनों को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त होगा। साथ ही जनकल्याण समारोहों के सुन्दर-सुन्दर चित्र और विस्तृत विवरण पढ़ने का अवसर मिलेगा। इसके अलावा माता जी/महाराज जी के कार्यक्रमों की सूचना, संस्थागत आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, जनकल्याण से संबंधित गतिविधियों के साथ-साथ विभिन्न सेवा उपक्रमों की भी सूचना व समाचार मिलेंगे। इसलिए प्रत्येक प्रेमी परिवार में नियमित रूप से पत्रिका अवश्य मंगाई जाए।

प्रेमी भक्तों/पाठकों को ज्ञात हो कि संस्था के सभी प्रचारक महात्मा/बाईगण तथा सेवकों के पास भी पत्रिकाएँ रहती हैं। आप उनसे हंसलोक संदेश पत्रिका प्राप्त कर सकते हैं। डाक से पत्रिका की सुलभ प्राप्ति के लिए गाँव/क्षेत्र के सभी प्रेमी भक्त एक साथ किसी एक प्रेमी-भक्त के नाम व पते पर पत्रिकाएं बंडल रूप में मंगवा सकते हैं।

नोट:- (1) हंसलोक संदेश पत्रिका की रसीद काटते समय पाठक का पेन नम्बर, आधार नम्बर तथा मोबाइल नम्बर रसीद पर अवश्य लिखें।

(2) पत्रिका की एक रसीद (पर्ची) 100/- रुपये से अधिक की न काटी जाए।

(3) पत्रिका के लिए मनीआर्डर भेजते समय अपना पेन नम्बर, आधार नम्बर और मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

(4) यदि आप एक से अधिक पत्रिकाएं बंडल के रूप में मंगाना चाहते हैं तो मो.नं-9038675826 पर संपर्क कर पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

मूल्य- एक प्रति- रु.10/-

हंसलोक संदेश पत्रिका मंगाने का पता:-

कार्यालय - हंसलोक संदेश

श्री हंसलोक आश्रम, बी-18, भाटी माइंस रोड, भाटी, छतरपुर,

नई दिल्ली-110074 संपर्क सूत्र- 8860671326

विशेष:- पत्रिका संबंधी अपने अमूल्य सुझावों से हमें अवगत कराते रहें। आपके सुझाव हमारे लिए मार्गदर्शन का कार्य करेंगे। -सम्पादक

अगस्त, 2025 के पर्व-त्योहार

□ 3 अगस्त रविवार- मित्रता दिवस □ 5 अगस्त मंगलवार- पुत्रदा एकादशी □ 9 अगस्त बुधवार-रक्षाबंधन □ 15 अगस्त शुक्रवार- स्वतंत्रता दिवस □ 16 अगस्त शनिवार- श्रीकृष्ण जन्माष्टमी □ 19 अगस्त मंगलवार- अजा एकादशी □ 26 अगस्त मंगलवार- हरतालिका तीज □ 27 अगस्त बुधवार- श्री गणेश चतुर्थी □ 28 अगस्त गुरुवार- ऋषि पंचमी □ 31 अगस्त रविवार- राधा अष्टमी तथा श्री सांख्य जी जन्मदिवस



अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस : 21 जून, 2025, श्री हंसलोक आश्रम, नई दिल्ली



नई दिल्ली, हंसलोक आश्रम। परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माता श्री मंगला जी की प्रेरणा से हंसज्योति- ए यूनिट ऑफ हंस कल्चरल सेंटर के तत्वावधान में **अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (21 जून)** के सुअवसर पर **सात दिवसीय योग प्रशिक्षण शिविर** का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आश्रम के साथ आस-पास के क्षेत्र से करीब 300 योग साधक एवं साधिकाओं ने सहर्ष शिविर में भाग लिया। अनुभवी योग शिक्षकों के द्वारा प्रतिदिन प्रातः 6:30 से 7:30 बजे तक योगासनों का प्रशिक्षण दिया गया। योगाभ्यास के दौरान सभी प्रशिक्षुओं को यह बताया गया कि आधुनिक समय में किस प्रकार जीवन सैली को सही तरीके से नहीं जीने के कारण लोग शारीरिक एवं मानसिक रूप से बीमार हो रहे हैं। योग शिक्षकों ने बताया कि योगासन तथा प्राणायाम के नियमित अभ्यास से व्यक्ति शारीरिक तथा मानसिक रूप से स्वस्थ रह सकता है।

श्री कृष्ण जन्माष्टमी की हार्दिक शुभकामनाएं!

भगवान श्रीकृष्ण का प्रादुर्भाव मानवमात्र के उद्धार के लिए हुआ। उनकी शिक्षा है कि मनुष्य को सत्य और धर्म के मार्ग पर चलना चाहिए, चाहे कितनी भी कठिनाइयां आएँ। अहंकार मनुष्य को पतन की ओर ले जाता है, इसलिए अहंकार से बचना चाहिए। मन को वश में करने वाला व्यक्ति सभी बाधाओं को पार कर सकता है। भगवान श्रीकृष्ण की इन शिक्षाओं को आत्मसात कर ही हम उनके सच्चे भक्त और अनुयायी कहला सकते हैं। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी की सभी को हार्दिक शुभकामनाएं!

- परमपूज्य श्री भोले जी महाराज एवं माता श्री मंगला जी



आध्यात्मिक सत्संग-भजन कार्यक्रम के वीडियो **YouTube** पर उपलब्ध हैं। **YouTube** पर **HANSLOKTV** चैनल को अवश्य सब्सक्राइब करें और श्री भोले जी महाराज व माता श्री मंगला जी तथा संत-महात्माओं के सत्संग-भजन से आत्मलाभ प्राप्त करें।



MOB: 8800291788/ 8800291288



/hanslok